www.dainikjayantnews.com
कोटद्वार, शनिवार
12 सितम्बर 2026
वर्ष: 49
अंक: 128 पृष्ठ: 6
मूल्य: 2.00

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

तमिलनाडु के मंदिरों में अब लागू होगी नई व्यवस्था

मंदिरों के प्रसाद की क्वालिटी और कीमत होगी तय थलपति विजय की सरकार ने ले लिया बड़ा फैसला

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के मंदिरों में मिलने वाले प्रसाद की गुणवत्ता, मात्रा और कीमत को लेकर थलपति विजय की सरकार ने बड़ा फैसला लिया है।। प्रसाद को लेकर लगातार मिल रही शिकायतों के बाद सरकार के हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग ने 10 तरह के आम प्रसाद के लिए एक मास्टर स्कीम तैयार की है। इसके तहत पूरे राज्य में भक्तों को तय मानक के अनुसार प्रसाद उपलब्ध कराया जाएगा। नई

व्यवस्था में प्रसाद की रेसिपी, सामग्री का अनुपात, मात्रा, बैच साइज, कीमत और पैकेजिंग का मानक तय किया जाएगा। मंदिरों को प्रसाद परिसर में ही तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं। विभाग के मुताबिक, प्रसाद की गुणवत्ता और बनाने की प्रक्रिया पर निगरानी रखने के लिए इसे बाहर से बनवाने की व्यवस्था को हतोत्साहित किया जाएगा। विभाग कमिश्नर टीजी विनय के सर्कुलर के मुताबिक, प्रसाद तैयार करने में आविन घी और कोऑपरेटिव स्टोर की दरों पर खरीदी गई सामग्री का इस्तेमाल किया जाएगा। प्रसाद की कीमत सब देखकर तय होगी।

पैकेजिंग पर देनी होगी पूरी जानकारी

प्रसाद की पैकेजिंग को लीगल मेट्रोलॉजी (पैकेज्ड कमोडिटीज) रूल्स, 2011 के नियम 27 के अनुरूप रखना होगा। पैकेट पर निर्माता या आयातक का नाम-पता, उत्पाद का सामान्य नाम, कुल मात्रा, निर्माण या पैकिंग की तारीख, एमआरपी, यूनिट बिक्री मूल्य और शिकायत के लिए ग्राहक संपर्क की जानकारी दर्ज करनी होगी। बता दें कि कई मंदिरों में प्रसाद बनाने और बेचने का काम बाहरी एजेंसियों को दिया जाता है। ऐसे में इसकी तैयारी और गुणवत्ता पर विभाग का सीधा नियंत्रण नहीं रहता। नई व्यवस्था का उद्देश्य प्रसाद की गुणवत्ता और बिक्री प्रक्रिया में पारदर्शिता लाना है। हालांकि, जिन मंदिरों में पारंपरिक रेसिपी के अनुसार प्रसाद तैयार होता है।

बदरीनाथ के तप्तकुंड में स्नान के दौरान दो महिलाओं की मौत

बदरीनाथ। बदरीनाथ। बदरीनाथ धाम के तप्तकुंड में शुक्रवार को स्नान करने के दौरान दो महिलाओं की मौत हो गई। दोनों महिलाएं राजस्थान के भीलवाड़ा की रहने वाली थीं। पुलिस ने बताया कि राजस्थान के भीलवाड़ा निवासी रामू देवी (71) और प्रेमा देवी (63) बदरीनाथ में चल रही भागवत कथा सुनने के लिए परिजनों के साथ चार सितंबर को आई थीं। वह रोजाना तप्तकुंड में स्नान करती थीं और 108 बार डुबकी लगाती थीं। शुक्रवार को भी वे परिजनों और अन्य श्रद्धालुओं के साथ तप्तकुंड पहुंचीं। 108 डुबकी लगाने के दौरान दोनों अचानक बेहोश हो गईं। पुलिस की मदद से उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया जहां चिकित्सकों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।प्रथम दृष्टया 108 बार डुबकी लगाने के दौरान ऑक्सीजन की कमी से मौत होने की आशंका है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद मौत के कारण की स्थिति स्पष्ट होगी।

संक्षिप्त

ट्रक-बोलेरो भिड़े, 8 लोगों की मौत

जेसीबी-क्रेन से गाड़ी हटाई गई, रायपुर से नागपुर जाते वक्त हादसा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के भंडारा जिले में शुक्रवार को ट्रक और बोलेरो की टक्कर में 3 बच्चों समेत 8 लोगों की मौत हो गई, जबकि 3 लोग घायल हैं। पुलिस के मुताबिक, हादसा सुबह करीब 4 बजे नागपुर-रायपुर नेशनल हाईवे पर पिंपलगांव सड़क के पास हुआ। सभी लोग छत्तीसगढ़ के रायपुर से

नेशनल हाईवे-53 के रास्ते नागपुर जा रहे थे। ट्रक में फंसे पिकअप को निकालने के लिए दो जेसीबी की मदद लेनी पड़ी। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और राहत-बचाव का काम शुरू किया। इससे पहले गुरुवार को नांदेड जिले में नांदेड-भोकर रोड पर वैन और ट्रक की टक्कर हो गई थी। हादसे में 6 लोगों की मौत हुई थी, जबकि 8 लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। पुलिस के मुताबिक हादसा शाम करीब 7 बजे सीताखंडी घाट के पास हुआ। टाटा मैजिक वैन नांदेड से भोकर की ओर जा रही थी, तभी सामने से आ रहे ट्रक से उसकी जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी तेज थी कि वैन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

ऊर्जा संकट के बावजूद मजबूत रही भारतीय अर्थव्यवस्था

आईएमएफ ने की तारीफ, कहा- दुनिया का ग्रोथ इंजन है भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड ने भारतीय अर्थव्यवस्था की तारीफ की है। साथ ही भारत को दुनिया का ग्रोथ इंजन भी बताया है। भारत की अर्थव्यवस्था ने ऊर्जा संकट और वैश्विक चुनौतियों के बीच भी अपनी तेज रफ्तार बरकरार रखी है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही यानी अप्रैल-जून में देश की रियल जीडीपी ग्रोथ 7.8 फीसदी दर्ज की गई है। आईएमएफ ने भारत के इस बेहतर प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि

मजबूत सर्विसेज सेक्टर और बेहतर एक्सपोर्ट के दम पर यह ग्रोथ उम्मीद से काफी बेहतर रही है। आईएमएफ की प्रवक्ता जूली कोजाक ने प्रेस ब्रीफिंग में बताया कि अप्रैल-जून तिमाही में भारत की 7.8 फीसदी की जीडीपी ग्रोथ उनके अनुमान और मार्केट एक्सपर्ट्स की उम्मीदों से कहीं ज्यादा है। उन्होंने कहा कि सर्विसेज और एक्सपोर्ट में बेहतर प्रदर्शन ने इस ग्रोथ को रफ्तार दी है। जूली कोजाक के मुताबिक, यह प्रदर्शन दिखाता है कि एनर्जी प्राइस शॉक के बाद भी भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह मजबूत है।

ब्रिक्स में पुतिन का अमेरिका-यूरोप पर तंज, कमजोर देश खुद को जी7 क्यों कहते हैं

पीएम मोदी बोले- ब्रिक्स देशों में दुनिया की 40 प्रतिशत जीडीपी

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्रिक्स बिजनेस फोरम में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने जी7 पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि समझ नहीं आता कि जी7 को 'ग्रुप ऑफ सेवन' क्यों कहा जाता है।

पुतिन ने कहा कि पिछले 5 साल में दुनिया की 40 प्रतिशत से ज्यादा जीडीपी ब्रिक्स देशों से आई है, जबकि जी7 की हिस्सेदारी सिर्फ 29 प्रतिशत रही। दुनिया की आर्थिक ग्रोथ में भी इसकी हिस्सेदारी आधे से ज्यादा रही, जबकि जी7 का योगदान सिर्फ 18 प्रतिशत रहा।

उन्होंने कहा कि इसकी बड़ी वजह ब्रिक्स देशों की आधी से ज्यादा आबादी और उनके तेजी से बढ़ते घरेलू बाजार हैं। इसके बाद पीएम मोदी ने भी फोरम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स देशों में दुनिया की आधी आबादी रहती है। ये देश दुनिया की 40 प्रतिशत जीडीपी और 25 प्रतिशत से ज्यादा ग्लोबल ट्रेड में हिस्सा रखते हैं।

पुतिन को भेंट की महाकाव्य 'तिरुक्कुरल' फिर समझाया जीवन का सार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को तमिल किताब तिरुक्कुरल भेंट की है। यह पुस्तक तमिल लेखक संत तिरुवल्लुवर ने लिखी है और पुतिन को इसका रूसी संस्करण दिया गया है। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के भारत आए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन जब पीएम मोदी के साथ द्विपक्षीय बातचीत के लिए भारत मंडपम पहुंचे तो पीएम मोदी ने उन्हें प्राचीन तमिल ग्रंथ तिरुक्कुरलरूसी अनुवाद सौंपा। तिरुक्कुरल तमिल संत, कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर ने लिखी है। करीब 2000 साल पुरानी इस तमिल किताब का रूसी अनुवाद नायरा मकर्चयन ने किया है। इस प्राचीन ग्रंथ को सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ क्लासिकल तमिल ने प्रकाशित किया है। इस पुस्तक में मूल तमिल पाठ के छंदों का रूसी अनुवाद है।

दिल्ली में दुनिया की बड़ी ताकतें करेंगी मंथन

ब्रिक्स समिट आज से, भारत कर रहा है शक्ति प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में 12 और 13 सितंबर को होने वाले 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन को लेकर तैयारियां लगभग-लगभग पूरी हो चुकी है। ऐसे में अब दुनियाभर के नेताओं का आगमन भी लगातार चर्चा में है। इसी बीच ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए

पेजेशकियान ने कहा, एकतरफा रवैये का मुकाबला करेंगे मोदी के साथ द्विपक्षीय बैठक करेंगे, संबंधों पर होगी चर्चा

शुक्रवार को भारत की राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली पहुंच गए हैं। यहां वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय बैठक भी करेंगे। तेहरान से रवाना होने से पहले पत्रकारों से बात करते हुए ईरानी राष्ट्रपति ने ब्रिक्स के मुख्य उद्देश्यों पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि इस संगठन का मुख्य उद्देश्य दुनिया में एकतरफावाद का मुकाबला करना है।

अमेरिकी डॉलर को लेकर भी बोले पेजेशकियान

पेजेशकियान आगे कहा था क ब्रिक्स के भीतर एक विशेष बैंक बनाया गया है और हम देशों के बीच आपसी निवेश को बढ़ावा देने जा रहे हैं ताकि सदस्य देशों के बीच लेन-देन डॉलर पर निर्भरता के बिना हो सके। इससे अमेरिकी डॉलर की मनमानी और आधिपत्य को कम करने में मदद मिलेगी। इतना ही नहीं पेजेशकियान ने बताया कि इस सम्मेलन में स्वतंत्रता, एकजुटता, स्थिरता, प्रतिरोध और इनोवेशन जैसे मुद्दों के साथ-साथ आर्थिक, वित्तीय, औद्योगिक और व्यापार से जुड़े अहम विषयों पर चर्चा की जाएगी। ईरानी राष्ट्रपति ने भारत और ईरान के संबंध को लेकर भी अपना बात रखी। उन्होंने ईरान और भारत के पुराने रिश्तों का जिक्र करते हुए कहा कि दोनों देश अपनी समानताओं का दायरा और बढ़ा सकते हैं। बता दें कि भारत यात्रा के दौरान उनका चीन, रूस, ब्राजील और भारत समेत कई अन्य देशों के अधिकारियों से मिलने का भी कार्यक्रम है। इससे पहले दोनों नेता बिश्केक में मिले थे।

जासूसी कांड के बाद पाकिस्तान धार्मिक यात्रा के बदले नियम

प्राइवेट टूर पर लगी रोक, वीजा अप्लाई की शर्तें भी बदलीं

हिसार (एजेंसी)। केंद्र और हरियाणा सरकार ने भारत-पाकिस्तान धार्मिक यात्राओं के नियम बदल दिए हैं। यह फैसला ऑपरेशन सिंदूर के बाद सामने आए पाक जासूसी नेटवर्क और हिसार की यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा केस के बाद लिया गया है। जांच में खुलासा हुआ है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी और वहां के प्राइवेट टूर ऑपरेटर धार्मिक यात्रा के नाम पर भारतीय नागरिकों को स्पॉन्सर करते हैं, ताकि उनसे जासूसी करा सकें। इसे देखते हुए भारत सरकार ने पाकिस्तान से चलने वाले सभी प्रकार के प्राइवेट स्पॉन्सर्ड टूर पर पाबंदी लगा दी है।

वीजा की शर्तें भी बदल दी गई हैं। हरियाणा सिख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के टूरिज्म इंचार्ज हरकीरत सिंह ने भी इसकी पुष्टि की। उन्होंने बताया कि ज्योति मल्होत्रा जैसे जासूसी केस मिलने के बाद से प्राइवेट स्पॉन्सर टूर बंद कर दिए गए हैं। पहले पाकिस्तान जाने वाले लोग वहां की एजेंसी से संपर्क कर टूर प्रोग्राम अरेंज करते थे। फिर यहां से वहां जाकर धार्मिक टूर करते थे। भारत और पाकिस्तान के बीच धार्मिक यात्राएं दोनों माध्यमों (इंडिविजुअल और जत्थे) से होती हैं। अधिकांश श्रद्धालु भारत पाकिस्तान 'रिलीजियस श्राइन्स प्रोटोकॉल 1974' के तहत जत्थों (ग्रुप) में यात्रा करते हैं। इसमें विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय की ओर से वीजा पर चर्चा हुई।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से भारतीय युवा निराश

नई दिल्ली (एजेंसी)। राहुल गांधी ने शुक्रवार को कहा कि भारत की शिक्षा व्यवस्था पीढ़ी को निराश कर रही है, जिसे बेहतर भविष्य देने के लिए बनाया गया था। उन्होंने छात्रों,

अभिभावकों और शिक्षकों से पूछा कि उनका शिक्षा व्यवस्था से भरोसा क्यों उठ गया है। उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा व्यवस्था में सुधार की शुरुआत उन लोगों की बात सुनने से होगी, जो रोजाना इसकी कमियों का सामना कर रहे हैं। राहुल ने छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों से अपने अनुभव, सबूत और सुझाव ऑनलाइन साझा करने को कहा। राहुल ने यह बात छात्रों की गूंज के 8 दिन पहले की है। इसका आयोजन 19 सितंबर को मध्य प्रदेश के इंदौर में होगा।

ब्रिक्स समिट को लेकर कांग्रेस में मचा घमासान

पूर्व वित्तमंत्री चिदंबरम ने पूछा-ब्रिक्स से देश को क्या मिला

थरूर बोले-11 देशों को एक मंच पर लाना भारत की ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में ब्रिक्स समिट को लेकर कांग्रेस के दो सीनियर नेताओं के अलग-अलग बयान सामने आए हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम ने पूछा था, 'इस ब्रिक्स से भारत को क्या फायदा हुआ।' देश में 2012, 2016 और 2021 में भी समिट

हो चुके हैं। उधर, कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने समिट के फायदे बताए। उन्होंने कहा कि भारत में सम्मेलन होना देश की कूटनीतिक ताकत को दिखाता है। 11 देशों के बड़े नेताओं का भारत आना और उन्हें एक मंच पर लाना भारत की दूसरे देशों को साथ लाने की क्षमता को दर्शाता है। 18वें ब्रिक्स समिट का आयोजन 12-13 सितंबर को नई दिल्ली में होगा। इसमें रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के शी जिनपिंग समेत 11 सदस्य देशों के शीर्ष नेता शामिल हो रहे हैं। सम्मेलन में वैश्विक अर्थव्यवस्था, व्यापार, टेक्नोलॉजी और एनर्जी जैसे मुद्दों पर चर्चा होगी।

चिदंबरम ने कहा था- इन संगठनों की सदस्यता पर विचार हो

चिदंबरम ने बुधवार को सवाल किया था कि भारत ब्रिक्स के अलावा जी 20 और शंघाई सहयोग संगठन जैसे कई बहुपक्षीय संगठनों का हिस्सा है, लेकिन इन संगठनों से देश को वास्तव में क्या ठोस लाभ मिला है, इस पर विचार होना चाहिए। थरूर ने शनिवार को ब्रिक्स को ग्लोबल साउथ के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बताया। उन्होंने कहा कि ग्लोबल साउथ में 100 से ज्यादा देश हैं, लेकिन ब्रिक्स में शामिल 11 प्रमुख देश दुनिया की बड़ी आबादी और करीब 41 फीसदी वैश्विक जीडीपी का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे में इस समूह को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस साल ब्रिक्स की कमान भारत के पास है। ब्रिक्स दुनिया की बड़ी उभरती अर्थव्यवस्थाओं का समूह है। इसमें भारत, रूस, चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के साथ मिस्र, ईरान, इथियोपिया आदि देश हैं।

शुभेंदु ने मंदिर में बैठकर खाई मछली

बागेश्वर बाबा के नॉन-वेज न खाने के विवाद को किया खत्म

कोलकाता (एजेंसी)। बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कालीघाट के मां काली मंदिर में बैठकर मछली खाई, जिससे ऐसा लग रहा है कि भारतीय जनता पार्टी बाबा बागेश्वर के दुर्गापूजा में नॉन-वेज न खाने वाले विवाद को खत्म करने की कोशिश कर रही है। बाबा बागेश्वर के नाम से मशहूर धीरेंद्र शास्त्री ने दुर्गा पूजा के दौरान मांसाहार छोड़ने की अपील की थी।

संपादकीय

बुनियादी मुद्दे या फिर धर्म का सहारा

उत्तराखंड में अगले वर्ष विधानसभा चुनाव होने है और राजनीतिक दलों के पास अपने चुनावी घोषणा पत्र में बुनियादी मुद्दों को लेकर अभी कोई नीति स्पष्ट नहीं है। धर्म जाति की राजनीति क्या इस बार मतदाताओं पर असर डालेगी या फिर इन सब मुद्दों से उठ चुका मतदाता अब केवल बुनियादी मुद्दों का विकास के रिपोर्ट कार्ड पर मतदान करेगा? एक ओर राजनीतिक दल विकास, रोजगार, सड़क, स्वास्थ्य और पलायन जैसे मुद्दों को जनता के सामने रखने की बात कर रहे है, तो दूसरी ओर धर्म, आस्था और सांस्कृतिक पहचान से जुड़े विषय भी राजनीतिक विमर्श के केंद्र में बने हुए हैं। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि आगामी समय में उत्तराखंड की राजनीति का केंद्र बुनियादी मुद्दे होंगे या फिर चुनावी बहस धर्म के इर्द–गिर्द घूमेगी। राज्य बनने के बाद जनता को उम्मीद थी कि पहाड़ों से पलायन रुकेगा, गांवों में रोजगार बढ़ेगा, स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधाएं मजबूत होंगी तथा सड़क और संचार व्यवस्था बेहतर होगी। लेकिन आज भी राज्य के अनेक गांव खाली हो रहे हैं। युवा रोजगार की तलाश में मैदानों और महानगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। बरसात के मौसम में सड़कें टूटने, भूस्खलन और आपदा प्रबंधन की कमजोरियों पर लगातार सवाल उठते रहते है। रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढांचे जैसे मुद्दे आज भी आम नागरिक की प्राथमिकताओं में शामिल हैं।उत्तराखंड धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य है। चारधाम यात्रा, हरिद्वार, ऋषिकेश और अनेक धार्मिक स्थलों के कारण यहां आस्था हमेशा राजनीति का एक प्रभावी तत्व रही है। हाल के वर्षों में समान नागरिक संहिता (यूसीसी), धर्मांतरण विरोधी कानून और भूमि कानून जैसे विषय राजनीतिक बहस के केंद्र में रहे है। सत्तारूढ़ दल इन्हें अपनी उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि विपक्ष इनके प्रभाव और प्राथमिकता पर सवाल उठाता है।

वास्तविकता यह है कि उत्तराखंड की जनता केवल भावनात्मक मुद्दों से प्रभावित होने वाली नही है। राज्य का मतदाता अक्सर स्थानीय समस्याओं को भी गंभीरता से देखता है। यही कारण है कि चुनाव के समय चाहे धर्म और पहचान की राजनीति चर्चा में रहे, लेकिन मतदाता अपने क्षेत्र की समस्याओं का समाधान भी चाहता है। राजनीतिक दलों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे जनता की भावनाओं और वास्तविक आवश्यकताओं के बीच संतुलन कैसे बनाते हैं। यदि चुनावी बहस केवल धर्म और आरोप–प्रत्यारोप तक सीमित रह गई तो राज्य के मूल प्रश्न पीछे छूट सकते है। वही यदि रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पलायन और आपदा प्रबंधन जैसे विषय चुनावी एजेंडे के केंद्र में आते है तो यह उत्तराखंड के भविष्य के लिए अधिक सकारात्मक संकेत होगा। आगामी राजनीतिक संघर्ष में संभवतः दोनों मुद्दे साथ–साथ चलेंगे, परंतु अंतिम निर्णय मतदाता के हाथ में होगा कि वह भावनात्मक नारों को प्राथमिकता देता है या फिर अपने दैनिक जीवन से जुड़े सवालों को। बीजेपी और कांग्रेस दोनों राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों के तालमेल पर चुनाव लड़ती है लेकिन जिस प्रकार से राष्ट्रीय परिपेक्ष में कुछ मुद्दे जातीय व्यवस्था को लेकर टूर पकड़ रहे हैं इसका असर भी निश्चित तौर पर देखने को मिलेगा। फिलहाल तो नजर इस बात पर रहेगी कि उत्तराखंड के लोग लुभावनी और जाति धर्म की बातों में आते है या फिर इस बार राजनीतिक दलों को अवसरवादिता की राजनीति पर आईना दिखाएंगे।

डोनाल्ड ट्रंप के गुरु हैं मोदी?

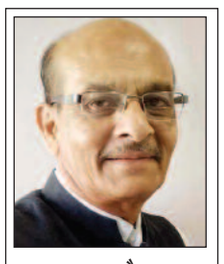

सनत जैन

अमेरिका सहित दुनिया के देशों में मोदी मॉडल की गूंज...

क्या दुनिया की सबसे पुरानी लोकतांत्रिक व्यवस्था अब दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र से चुनाव जीतने के नए-नए तरीके सीख रही है? यह सवाल इसलिए महत्वपूर्ण हो गया है, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में भारत की चुनाव व्यवस्था का सार्वजनिक रूप से उल्लेख करते हुए, उसे अमेरिका के लिए उदाहरण के तौर पर पेश किया है। अगस्त में ट्रंप ने भारत के मतदाता पहचान पत्र और नागरिकता सत्यापन व्यवस्था का हवाला देते हुए अमेरिकी चुनावों में कड़े पहचान नियम लागू करने की वकालत की। सीधे यह कहना कि ट्रंप, नरेंद्र मोदी के शिष्य बन गए हैं, ठीक नहीं है, लेकिन जिस तरह से नरेंद्र मोदी को ट्रम्प फॉलो कर रहे हैं, दोनों नेताओं की राजनीति में कुछ दिलचस्प और विचित्र समानताएं जरूर दिखने को मिलती हैं। यही तुलना इस तरह के विचार को बल देती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले वर्षों में एक मजबूत राजनीतिक ब्रांड विश्व गुरु के रूप में भारत सहित सारी दुनिया में अपने आपको पेश किया है। समर्थक उन्हें विश्व मंच पर भारत की प्रभावी आवाज और विश्व गुरु के रूप में पिछले कई वर्षों से प्रस्तुत करते हैं। मोदी को विभिन्न देशों से अनेक सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिले हैं। दुनिया के किसी भी राष्ट्राॅध्यक्ष को इतने कम समय में इतने सम्मान नहीं मिले हैं। किसी नेता की अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता और उसकी चुनावी रणनीति तथा लंबे समय तक सत्ता में बने रहने को उसकी सफलता से जोड़कर देखा जाता है। ट्रंप की राजनीति का सबसे बड़ा हथियार उनकी सीधी, आक्रामक और जोखिम लेने वाली शैली है। दूसरे कार्यकाल में उन्होंने टैरिफ को आर्थिक और राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। इसके परिणामस्वरूप अमेरिका में महंगाई और आर्थिक दबाव बना। आईएमएफ के अनुसार 2025 में अमेरिकी महंगाई पर टैरिफ का बड़ा असर दिखाई दिया। अमेरिका का सरकारी कर्ज 123.9 प्रतिशत जीडीपी की तुलना पर पहुंच गया। कुछ ऐसी ही स्थिति भारत की है। पिछले 12 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में भारत के ऊपर कर्ज बढ़ता ही जा रहा है। अब असली समानता अर्थव्यवस्था से ज्यादा चुनावी राजनीति में दिखाई देने लगी है। भारत की चुनावी राजनीति में मतदाता पहचान, नागरिकता, मतदाता सूची और सत्यापन जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण हैं। भारत में चुनाव आयोग की कार्य प्रणाली को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं। पिछले वर्षों में चुनाव आयोग को लेकर बहुत सारे मामले हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट भी गए हैं। इसके बाद भी डोनाल्ड ट्रंप इन्हीं मुद्दों को अमेरिकी में लाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने भारत की चुनाव व्यवस्था का उदाहरण देते हुए सेव एक्ट के समर्थन में नागरिकता प्रमाण और फोटो आईडी जैसी शर्तों की वकालत अमेरिका में शुरू कर दी है। भारत की एसआईआर और अमेरिका में प्रस्तावित चुनावी नियमों को समान बताना सही नहीं होगा। दोनों देशों की चुनाव व्यवस्था, संघीय ढांचा और मतदाता पंजीकरण प्रणाली अलग है। इसके बाद भी ट्रंप भारत की व्यवस्था को अमेरिका में लागू करने की कोशिश कर रहे हैं। अब आते हैं, सबसे दिलचस्प मुद्दे रेवड़ी या चुनाव के पहले मतदाताओं को आर्थिक सहायता देकर अपने पक्ष में करना। 9 सितंबर 2026 को ट्रंप ने घोषणा की है, यदि रिपब्लिकन पार्टी प्रतिनिधि सभा और सीनेट दोनों में बहुमत बनाए रखती है। तो अमेरिकी वयस्क नागरिकों को 5,000 डॉलर का डिविडेंड दिया जाएगा। इसका संभावित खर्च एक ट्रिलियन डॉलर से अधिक होगा। भारत में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा कथित तौर पर 15 लाख रुपये चुनाव जीतने पर देने का वादा किया गया था, जिसे बाद में चुनावी जुमला करार दिया गया। चुनाव के पहले भारत में इस तरह की घोषणा पिछले कई चुनाव में देखने को मिल रही हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी चुनावी सभाओं में इसे फ्री की रेवड़ी कहते थे। चुनाव के ठीक पहले अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी यही रास्ता अखत्यार किया है। यहीं से वर्तमान राजनीति के नए समीकरण शुरू होते हैं। बड़ी संख्या में मतदाताओं को नगद राशि देकर अपने पक्ष में मतदान कराकर चुनाव जीतना। पहले नेता की छवि, राजनीतिक दल की विचारधारा, राष्ट्रवाद, आम जनता के लिए घोषणा पत्र, जिसमें सरकार किस तरह से काम करेगी इसका उल्लेख होता था। विपक्षी पार्टी के खिलाफ प्रचार कर उनकी स्थिति को कमजोर करना चुनाव लड़ने का माध्यम होता था। पिछले एक दशक में सारी दुनिया के देशों में राजनीति की दिशा और दशा बदली है। जो सत्ता में काबिज है वह सत्ता छोड़ना नहीं चाहता है। चीन, अमेरिका, इजराइल एवं अन्य लोकतांत्रिक देशों के शासक अपना पद छोड़ना नहीं चाहते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी कहा था वह तीसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति बनना चाहते हैं। क्या यह मोदी मॉडल है? कहना जल्दबाजी होगी। इतना जरूर कहा जा सकता है, जिस तरह भारतीय राजनीति में नेतृत्व की व्यक्तिगत छवि, अधिकारों का केंद्रीकरण, जनसंपर्क, राष्ट्रहित, धार्मिक ध्रुवीकरण, फ्री की रेवड़ी जैसी योजनाएं चुनावी रणनीति का हिस्सा हैं, वैसी ही प्रवृत्तियां अमेरिकी राजनीति में भी दिखाई दे रही हैं। असली सवाल यह नहीं है, मोदी ट्रंप के गुरु हैं या नहीं। असली सवाल यह है, क्या दुनिया की लोकतांत्रिक राजनीति अब एक-दूसरे देश से चुनाव जीतने की तकनीक सीख रही है? ट्रंप भारत से सबक ले रहे हैं, तो यह भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकतांत्रिक शक्ति की उपलब्धि मानना होगा। लोकतंत्र की सफलता केवल चुनाव जीतने में नहीं, बल्कि निष्पक्ष मतदाता सूची, स्वतंत्र संस्थाओं, पारदर्शी चुनाव, मजबूत अर्थव्यवस्था और नागरिक अधिकारों की रक्षा से होती है। इस दृष्टि से भविष्य में सवाल पूछेगा, पहले भारत व्यवस्था में अमेरिका से प्रेरणा लेता था, अब समय बदला है। अमेरिका जैसा विकसित राष्ट्र भारत से चुनावी राजनीति सीख रहा है? अगर ऐसा है, तो इसे भारत की बड़ी वैश्विक उपलब्धि माना जाएगा। जिस तरह की शासन व्यवस्था विकसित हो रही है उसमें लोकतांत्रिक व्यवस्था और नागरिक अधिकार धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं, पूंजीवादी व्यवस्था का निर्माण हो रहा है। इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

बिहार में बाढ़ की बड़ी चुनौती के बीच राहत का सहारा

कांतिलाल मांडोत

नदियों के उफान से लाखों प्रभावित, प्रशासन ने भोजन से लेकर नाव और चिकित्सा तक बढ़ाई व्यवस्था...

बिहार इस समय बाढ़ की गंभीर चुनौती से गुजर रहा है। राज्य की प्रमुख नदियों गंगा, कोसी और गंडक के जलस्तर ने कई जिलों में जनजीवन को प्रभावित किया है। 14 जिलों के 82 से अधिक प्रखंडों और सैकड़ों ग्राम पंचायतों में लाखों लोग बाढ़ की चपेट में हैं। कहीं घरों में पानी घुस गया है तो कहीं गांवों का संपर्क मुख्य मार्गों से टूट गया है। खेतों में पानी भरने से खेती प्रभावित हुई है और रोजमर्रा की जरूरतों के लिए भी लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे समय में सबसे बड़ी चुनौती बाढ़ के पानी के बीच प्रभावित परिवारों तक भोजन, पीने का पानी, दवाइयां और सुरक्षित आवागमन की सुविधा पहुंचाना है।

बाढ़ की भयावहता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि राज्य के करीब 40 लाख से अधिक लोग इसके प्रभाव में बताए जा रहे हैं। पटना, भोजपुर, सारण, वैशाली, भागलपुर, बेगूसराय, बक्सर, समस्तीपुर, मुंगेर, कटिहार, लखीसराय, खगड़िया, पूर्णिया और अरवल जैसे जिलों में बाढ़ का असर व्यापक है। कई स्थानों पर पानी गांवों के भीतर तक पहुंच गया है। निचले इलाकों में रहने वाले परिवारों के लिए सुरक्षित स्थान तक पहुंचना आसान नहीं है। सड़कों और संपर्क मार्गों पर पानी आने के कारण नाव ही कई जगहों पर आवागमन का प्रमुख साधन बनी हुई है।

हालांकि बाढ़ की स्थिति एक जैसी नहीं है। कोसी और सोन के जलस्तर में कमी आने से कुछ इलाकों में राहत की उम्मीद बनी है। गंडक के जलस्राव में भी स्थिरता दिखाई दे रही है। लेकिन गंगा का जलस्तर अब भी चिंता का कारण बना हुआ है। भागलपुर के सुल्तानगंज में गंगा का जलस्तर 36.80 मीटर दर्ज किया गया, जो वर्ष 2021 में दर्ज किए गए पिछले उच्चतम बाढ़ स्तर से थोड़ा ऊपर है। ऐसे में नदी किनारे बसे गांवों और निचले क्षेत्रों में प्रशासन को लगातार निगरानी रखनी पड़ रही है। बाढ़ का पानी घटने की स्थिति में भी खतरा पूरी तरह समाप्त नहीं माना जा सकता, क्योंकि बारिश और ऊपरी क्षेत्रों से आने वाले पानी के कारण जलस्तर में दोबारा वृद्धि हो सकती है। बाढ़ के दौरान सबसे महत्वपूर्ण सवाल प्रभावित लोगों के भोजन का होता है। जिन परिवारों के घर पानी से घिर जाते हैं, उनके लिए घर में रखा अनाज और खाना पकाने की व्यवस्था लंबे समय तक बनाए रखना मुश्किल होता है। इसे ध्यान में रखते हुए राज्य में सैकड़ों सामुदायिक रसोइयां संचालित की जा रही हैं। इन रसोइयों के माध्यम से लाखों लोगों को सुबह और शाम भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। यह व्यवस्था केवल भोजन पहुंचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि बाढ़ में फंसे परिवारों के लिए जीवन की सबसे जरूरी जरूरत पूरी करने का माध्यम बनी हुई है। राहत शिविरों में बच्चों के लिए दूध की व्यवस्था और महिलाओं के लिए आवश्यक स्वच्छता सामग्री उपलब्ध कराने की पहल भी महत्वपूर्ण है। बाढ़ पीड़ितों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के साथ उनके अस्थायी रहने की व्यवस्था भी प्रशासन के सामने बड़ी जिम्मेदारी है। राहत शिविरों में हजारों लोगों के रहने, भोजन और उपचार की व्यवस्था की गई है। जिन परिवारों के मकान पानी से घिर गए हैं या जिनके घरों में रहना सुरक्षित नहीं है, उनके लिए ऐसे शिविर अस्थायी आश्रय का काम कर रहे हैं। इन शिविरों में साफ-सफाई, पेयजल, शौचालय और स्वास्थ्य सुविधाओं पर विशेष ध्यान देना जरूरी है, क्योंकि लंबे समय तक बाढ़ का पानी रहने से बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। बाढ़ के बाद सबसे अधिक चिंता बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और गंभीर बीमारी से पीड़ित लोगों को लेकर होती है। सामान्य परिस्थितियों में अस्पताल तक पहुंचना आसान होता है, लेकिन पानी से घिरे गांवों में यह काम कठिन हो जाता है। इसी वजह से प्रभावित इलाकों में चिकित्सा शिविर लगाए गए हैं और नावों के माध्यम से भी स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई जा रही हैं। नाव से चलने वाली चिकित्सकीय व्यवस्था उन क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है जहां सड़क संपर्क बाधित हो चुका है। दवाइयों की उपलब्धता के साथ चिकित्सकीय दलों की नियमित मौजूदगी बाढ़ पीड़ितों को बड़ी राहत दे सकती है।

प्रशासन की ओर से प्रभावित परिवारों को तिरपाल और सूखा राशन भी उपलब्ध कराया जा रहा है। एक लाख से अधिक तिरपाल और हजारों सूखा राशन पैकेट वितरित किए जाने की जानकारी है। जिन परिवारों के घरों में पानी घुस गया है, उनके लिए तिरपाल तत्काल आश्रय उपलब्ध कराने में मददगार हैं। वहीं सूखा राशन उन क्षेत्रों में जरूरी है जहां सामान्य भोजन सामग्री पहुंचाना कठिन हो रहा है। बाढ़ केवल मनुष्य ही नहीं, पशुधन को भी प्रभावित करती है। ग्रामीण परिवारों के लिए पशु उनकी आजीविका का महत्वपूर्ण आधार होते हैं। इसलिए हजारों क्विंटल पशुचारा वितरित किया जाना राहत कार्य का जरूरी हिस्सा है। आवागमन की समस्या से निपटने के लिए बड़ी संख्या में नावों का संचालन किया जा रहा है। बाढ़ के समय नाव केवल यातायात का साधन नहीं रहती, बल्कि भोजन, दवा और राहत सामग्री पहुंचाने से लेकर लोगों को सुरक्षित स्थानों तक निकालने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाती है। प्रभावित क्षेत्रों में बचाव कार्य के लिए राज्य आपदा मोचन बल और राष्ट्रीय आपदा मोचन बल की टीमें भी तैनात की गई हैं। इन दलों की मौजूदगी किसी आकस्मिक स्थिति में तेजी से बचाव अभियान चलाने के लिए जरूरी है। खासकर रात के समय या अचानक जलस्तर बढ़ने की स्थिति में प्रशिक्षित बचाव दलों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। बाढ़ के दौरान अंतिम संस्कार जैसी मानवीय और सामाजिक जरूरतें भी प्रभावित होती हैं। नदी किनारे बने अनेक श्मशान घाट पानी में डूब जाने से परिवारों के सामने कठिन परिस्थितियां पैदा हो गई हैं। ऐसी स्थिति में प्रशासन को प्रभावित क्षेत्रों में वैकल्पिक स्थान उपलब्ध कराने तथा आवश्यक सहयोग देने की व्यवस्था करनी चाहिए। संकट की घड़ी में सम्मानजनक अंतिम संस्कार की सुविधा भी राहत कार्य का अभिन्न हिस्सा है। बिहार में इस वर्ष बारिश का कुल आंकड़ा सामान्य से कम रहा है, लेकिन सितंबर में वर्षा सामान्य से अधिक दर्ज की गई है। यही असमान वर्षा बाढ़ की स्थिति को जटिल बना रही है। आने वाले दिनों में भी कुछ क्षेत्रों में बारिश की संभावना है, इसलिए नदी किनारे बसे लोगों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। प्रशासन के लिए भी चुनौती यही है कि राहत व्यवस्था केवल वर्तमान स्थिति तक सीमित न रहे, बल्कि अगले कुछ दिनों की संभावित बारिश और जलस्तर को ध्यान में रखकर पहले से तैयारी रखी जाए। बाढ़ के बीच सबसे बड़ी उम्मीद राहत और बचाव व्यवस्था की मजबूती से जुड़ी है। सामुदायिक रसोइयों से भोजन, राहत शिविरों में आश्रय, नावों से आवागमन, चिकित्सा शिविरों से उपचार, बच्चों के लिए दूध, महिलाओं के लिए जरूरी सामग्री और पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था यह बताती है कि संकट के समय राहत तंत्र को कई स्तरों पर काम करना पड़ता है।

ब्रिक्स शक्ति-संघर्ष का अखाड़ा नहीं, सहयोग का सेतु बने

ललित गर्ग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस सम्मेलन की सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। एआई ने चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, उद्योग, वित्त और शासन के क्षेत्र में अभूतपूर्व संभावनाएं खोली हैं, लेकिन इसके साथ रोजगार, डेटा सुरक्षा, गलत सूचना, साइबर सुरक्षा और तकनीकी असमानता के खतरे भी बढ़े हैं।

नई दिल्ली में 12-13 सितंबर को होने वाला 18वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन ऐसे समय में हो रहा है, जब विश्व व्यवस्था गहरे संक्रमण से गुजर रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिम एशिया का तनाव, आतंकवाद, व्यापारिक टकराव, ऊर्जा एवं खाद्य सुरक्षा की चिंता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की तेज होती चुनौती और वैश्विक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर उठते प्रश्नों ने दुनिया के सामने अनेक अनुत्तरित सवाल खड़े कर दिए हैं। इसके साथ ही अमेरिका की व्यापार एवं रणनीतिक नीतियों से पैदा हो रहा दबाव भी वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहा है। ऐसे वातावरण में भारत की अध्यक्षता में होने वाला यह सम्मेलन केवल एक कूटनीतिक आयोजन नहीं, बल्कि बदलती विश्व व्यवस्था की दिशा तय करने का महत्वपूर्ण अवसर है। भारत ने अपनी अध्यक्षता का मूल मंत्र रखा है- लचीलेपन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के आधार पर भविष्य का निर्माण। ब्रिक्स अब 2006 में आरंभ हुई उस मूल अवधारणा से बहुत आगे निकल चुका है, जिसमें ब्राजील, रूस, भारत और चीन प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं के रूप में सामने आए थे और बाद में दक्षिण अफ्रीका भी इसमें शामिल हुआ। विस्तार के बाद यह 11 सदस्यीय समूह बन चुका है और इसका प्रभाव वैश्विक दक्षिण की राजनीति और अर्थव्यवस्था में लगातार बढ़ा है। वर्ष 2026 ब्रिक्स की स्थापना के दो दशक पूरे होने का वर्ष भी है। भारत के लिए यह अध्यक्षता इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि वह ब्रिक्स को किसी पश्चिम-विरोधी या अमेरिका-विरोधी मंच के रूप में नहीं, बल्कि विकासशील एवं उभरती अर्थव्यवस्थाओं की रचनात्मक, संतुलित और बहुपक्षीय आवाज के रूप में स्थापित करना चाहता है।

ब्राजील में 2025 के ब्रिक्स सम्मेलन में वैश्विक दक्षिण की आवाज को मजबूत करने, बहुपक्षीय व्यवस्था में सुधार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जिम्मेदार वैश्विक शासन, जलवायु वित्त, स्वास्थ्य, व्यापार और वित्तीय सहयोग जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण सहमति बनी थी। रियो घोषणा में संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण बनाने और वैश्विक संस्थाओं में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया गया था। साथ ही स्थानीय मुद्राओं में वित्तीय लेन-देन, सीमा-पार भुगतान व्यवस्था और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने की दिशा में भी आगे बढ़ने की बात कही गई थी। भारत को 2026 की अध्यक्षता सौंपते हुए ब्राजील ने नई दिल्ली से इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की अपेक्षा व्यक्त की थी। इस दृष्टि से दिल्ली सम्मेलन की पहली बड़ी कसौटी यही होगी कि ब्रिक्स घोषणाओं और वास्तविक उपलब्धियों के बीच की दूरी कितनी कम कर पाता है। भारत ने अध्यक्षता के दौरान 25 से अधिक शहरों में 350 से अधिक बैठकें और उच्चस्तरीय कार्यक्रम आयोजित किए हैं। राजनीतिक एवं सुरक्षा सहयोग, आर्थिक एवं वित्तीय सहयोग तथा सांस्कृतिक एवं जन-जन संपर्क-इन तीनों क्षेत्रों में व्यावहारिक परिणामों पर जोर दिया गया है। इसलिए अब दुनिया की नजर इस बात पर होगी कि सम्मेलन के अंत में केवल लंबा संयुक्त घोषणापत्र सामने आता है या कुछ ऐसे ठोस फैसले भी होते हैं जिनका असर आने वाले वर्षों में दिखाई दे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस सम्मेलन की सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। एआई ने चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, उद्योग, वित्त और शासन के क्षेत्र में अभूतपूर्व संभावनाएं खोली हैं, लेकिन इसके साथ रोजगार, डेटा सुरक्षा, गलत सूचना, साइबर सुरक्षा और तकनीकी असमानता के खतरे भी बढ़े हैं। ब्राजील सम्मेलन में भी एआई के वैश्विक शासन को लेकर व्यापक चिंता व्यक्त की गई थी। भारत अब ब्रिक्स देशों के बीच एआई, उन्नत कंप्यूटिंग, क्वांटम तकनीक और सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की दिशा में जोर दे रहा है। यदि ब्रिक्स तकनीक को कुछ शक्तिशाली देशों और कंपनियों के नियंत्रण से बाहर निकालकर विकासशील देशों की पहुंच तक ले जाने की प्रभावी व्यवस्था बना सके, तो यह उसकी बड़ी उपलब्धि होगी। दूसरी बड़ी चुनौती आर्थिक है। विश्व अर्थव्यवस्था में ब्रिक्स का वजन बढ़ रहा है, लेकिन समूह के भीतर आपसी व्यापार अभी भी उसकी संभावित क्षमता के अनुरूप नहीं है। भारत आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक मजबूत और विविध बनाने, छोटे एवं मध्यम उद्योगों को वित्त उपलब्ध कराने तथा स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है। जयपुर में हुई ब्रिक्स व्यापार मंत्रियों की बैठक में ब्रिक्स इकनोमिक पार्टनरशिप 2030, एमएसएमई के लिए वित्तीय सुविधा और अधिक संतुलित व्यापार जैसे मुद्दों पर प्रगति हुई है।

यहां 'डी-डॉलराइजेशन' का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है, लेकिन भारत का दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक है। भारत किसी नई साझा ब्रिक्स मुद्रा के निर्माण की जल्दबाजी में नहीं है। इसके बजाय सीमा-पार डिजिटल भुगतान की ऐसी व्यवस्था विकसित करने पर जोर है, जिससे सदस्य देश अपनी-अपनी राष्ट्रीय मुद्राओं में अपेक्षाकृत सुगम व्यापार कर सकें। यह दृष्टिकोण अमेरिकी डॉलर के खिलाफ किसी राजनीतिक मोचेबंदी से अधिक वित्तीय स्वायत्तता और लेन-देन की सुविधा का प्रयास है। परंतु ब्रिक्स की सबसे बड़ी कमजोरी उसकी आंतरिक विविधता और मतभेद हैं। भारत और चीन के बीच सीमा एवं रणनीतिक अविश्वास की विरासत अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। रूस और पश्चिम के बीच संघर्ष, ईरान से जुड़े तनाव तथा पश्चिम एशिया की जटिल परिस्थितियां भी ब्रिक्स के लिए साझा राजनीतिक रुख बनाना कठिन बनाती हैं। विशेष रूप से पश्चिम एशिया के मौजूदा संकट में ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों के अलग-अलग हित हैं। ऐसे में ब्रिक्स यदि हर अंतरराष्ट्रीय मुद्दे पर एकमत नहीं हो पाता तो यह उसकी सीमाओं को उजागर करेगा।

यही कारण है कि भारत के सामने इस सम्मेलन में सबसे कठिन कूटनीतिक संतुलन है। उसे चीन और रूस के साथ सहयोग भी बढ़ाना है, लेकिन अमेरिका और यूरोप सहित पश्चिमी देशों से अपने आर्थिक एवं रणनीतिक संबंध भी बनाए रखने हैं। भारत का हित किसी एक शक्ति-ध्रुव के साथ खड़े होने में नहीं, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता मजबूत करने में है। ब्रिक्स को यदि केवल 'पश्चिम के विकल्प' के रूप में प्रस्तुत किया गया तो उसकी स्वीकार्यता सीमित हो सकती है, लेकिन यदि वह वैश्विक दक्षिण के विकास, शांति, तकनीकी समानता और न्यायपूर्ण प्रतिनिधित्व का मंच बनता है, तो उसका महत्व कहीं अधिक बढ़ेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लंबे समय से वैश्विक संस्थाओं में सुधार की आवश्यकता पर जोर देते रहे हैं। उनका तर्क है कि बीसवीं सदी में बनाई गई संस्थाओं को इक्कीसवीं सदी की वास्तविकताओं के अनुरूप बदलना होगा। आज विश्व अर्थव्यवस्था में जिन देशों का योगदान बढ़ा है, यदि उन्हें निर्णय प्रक्रिया में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिलता तो संस्थाओं की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता दोनों प्रभावित होती हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं में सुधार की मांग इसी व्यापक संदर्भ का हिस्सा है। ब्रिक्स इस मांग को संगठित आवाज देने का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

लेकिन सम्मेलन की सफलता का वास्तविक पैमाना अमेरिका की आलोचना या पश्चिमी व्यवस्था को चुनौती देना नहीं होगा। सफलता तब मानी जाएगी जब ब्रिक्स दुनिया को बेहतर विकल्प दे-ऐसा विकल्प जिसमें आर्थिक सहयोग हो, तकनीकी साझेदारी हो, ऊर्जा एवं खाद्य सुरक्षा हो, आतंकवाद के विरुद्ध साझा प्रतिबद्धता हो, आपूर्ति श्रृंखलाओं की सुरक्षा हो, पर्यावरणीय संतुलन हो और विकासशील देशों की वास्तविक भागीदारी हो। भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना तभी सार्थक होगी, जब ब्रिक्स शक्ति-संघर्ष का नया अखाड़ा बनने के बजाय सहयोग का नया सेतु बने। अंततः दिल्ली सम्मेलन भारत की कूटनीतिक क्षमता की भी परीक्षा है और ब्रिक्स की प्रासंगिकता की भी। दुनिया आज युद्ध से अधिक शांति, प्रतिस्पर्धा से अधिक सहयोग और प्रभुत्व से अधिक साझेदारी चाहती है। मानवता का भविष्य केवल हथियारों, अंतरिक्ष अभियानों या कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति में नहीं, बल्कि पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के बीच विश्वास, सह-अस्तित्व और साझा विकास में सुरक्षित है। यदि नई दिल्ली सम्मेलन घोषणाओं से आगे बढ़कर इस विश्वास को संस्थागत रूप देने की दिशा में कुछ ठोस कदम उठा सका, तो यह भारत की अध्यक्षता की बड़ी उपलब्धि होगी। अन्यथा ब्रिक्स भी अनेक वैश्विक मंचों की तरह उम्मीदें जगाने वाला, लेकिन अपेक्षाओं पर अधूरा उतरने वाला संगठन बनकर रह जाएगा।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

बैंक कर्मियों ने उठाई पांच दिवसीय कार्य सप्ताह लागू करने की मांग

अपनी विभिन्न मांगों को लेकर केंद्र सरकार के खिलाफ किया प्रदर्शन

जयन्त प्रतिनिधि।कोटद्वार : बैंकिंग व्यवस्था में सप्ताह में पांच दिन कामकाज लागू करने समेत कई लंबित मांगों को लेकर बैंक अधिकारियों और कर्मचारियों ने शुक्रवार को आवाज बुलंद की। यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस के बैनर तले कर्मचारियों ने बदरीनाथ मार्ग स्थित पंजाब नेशनल बैंक की शाखा के बाहर एकत्र होकर सरकार से मांगों पर शीघ्र निर्णय लेने की अपील की। कर्मचारियों का कहना था कि बैंकों में पांच दिवसीय कार्य सप्ताह को लेकर लंबे समय से चर्चा और सहमति का दौर चल रहा है, लेकिन प्रस्ताव पर अंतिम निर्णय नहीं होने से कर्मचारियों में नाराजगी है। उन्होंने कहा कि बैंकिंग क्षेत्र में लगातार काम का दबाव बढ़ रहा है। ऐसे में

कोटद्वार में बैंकिंग क्षेत्र की विभिन्न मांगों को लेकर प्रदर्शन करते बैंक अधिकारी एवं कर्मचारी।

कर्मचारियों को बेहतर कार्य-जीवन संतुलन देने के लिए पांच दिन का कार्य सप्ताह लागू किया जाना जरूरी है। प्रदर्शनकारियों ने परफॉर्मेंस लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) की व्यवस्था पर भी सवाल उठाए। उनका आरोप था कि प्रोत्साहन राशि के वितरण में समानता नहीं है और शाखा स्तर पर काम करने वाले कर्मचारियों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल रहा है। उन्होंने पीएलआई व्यवस्था की समीक्षा कर सभी स्तर के कर्मचारियों के साथ न्याय करने की मांग की। इसके अलावा बैंक शाखाओं में चतुर्थ श्रेणी और सफाई कर्मचारियों के रिक्त पदों पर भर्ती शुरू करने तथा सेवानिवृत्त बैंक कर्मचारियों की पेंशन को संशोधित करने की मांग भी उठाई गई। कर्मचारियों ने कहा कि इन मांगों को लंबे समय से संबंधित स्तर पर उठाया जा रहा है, लेकिन समाधान की दिशा में अपेक्षित गति नहीं दिखाई दे रही है। यूनियन पदाधिकारियों ने कहा कि कर्मचारियों की मांगों को नजर अंदाज किया गया तो संगठन स्तर पर आगे की रणनीति तय की जाएगी। प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने एकजुटता दिखाते हुए अपनी मांगों के समर्थन में नारे लगाए।

प्रदर्शन में उत्तरांचल बैंक एम्पलाइज यूनियन के प्रांतीय सहायक मंत्री वीरेंद्र सिंह रावत, यूएफबीयू नगर संयोजक डीपीएस बिष्ट, भीम प्रसाद, शुभम बिष्ट, कुलदीप चौधरी, जेपी भट्ट, सविता कोटनाला, रिचा रावत, मुन्नी देवी, कुलदीप गुसाईं, तपस्या जखमोला, दलवीर सिंह, मायाराम, मदन मोहन, सुरेंद्र गुसाईं, कमल पंत, जयपाल सिंह गुसाईं और शार्दुल कंडारी सहित अन्य बैंक अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

चाचा की हत्या का आरोपी भतीजा मोरी बाजार से दबोचा

पुरोला। मोरी के सुदूरवर्ती बरी गांव में चाचा की हत्या के बाद से फरार चल रहे आरोपी भतीजे को पुलिस और एसओजी की संयुक्त टीम ने पांचवें दिन गिरफ्तार कर लिया। आरोपी सुमन चंद्र शुक्रवार सुबह मोरी बाजार से पकड़ा गया। पुलिस उससे हत्याकांड के कारणों और घटना के संबंध में पूछताछ कर रही है। बीते सात सितंबर को बरी गांव के धौला दांता धार क्षेत्र में सुमन चंद्र ने अपने रिश्ते के चाचा करम चंद की कुल्हाड़ी से हत्या कर दी थी। वारदात के बाद आरोपित मौके से फरार हो गया था। इसके बाद से मोरी पुलिस और एसओजी की संयुक्त टीमें उसकी तलाश में लगातार अभियान चला रही थीं। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने सट्टा, मसरी, बरी, सेवा, खन्ना और दौणी समेत आसपास के गांवों में संभावित ठिकानों पर दबिश दी। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश के डोडरावर क्षेत्र में भी उसकी तलाश की गई। चार दिनों तक लगातार दबिश और सघन तलाश के बीच आरोपी ठिकाने बदलता रहा। आखिरकार शुक्रवार सुबह वह मोरी बाजार में पुलिस के हत्थे चढ़ गया। पुलिस एवं एसओजी की टीम आरोपी को थाना मोरी लेकर पहुंची।

वॉलीबाल में दुगड्डा और हैंडबॉल में पौड़ी ने मारी बाजी

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : राजकीय स्पोर्ट्स स्टेडियम में चल रही 76वीं जनपदीय शरदकालीन क्रीड़ा प्रतियोगिता के तीसरे दिन खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में दमखम दिखाया। दिनभर चले मुकाबलों में वॉलीबाल और हैंडबाल के मैचों में खिलाड़ियों ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। वॉलीबाल के अंडर-19 बालक वर्ग में दुगड्डा और अंडर-17 वर्ग में नैनीडांडा की टीम ने पहला स्थान हासिल किया। अंडर-19 बालक वर्ग की वॉलीबाल स्पर्धा में दुगड्डा की टीम ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए खिताब अपने नाम किया। पोखड़ा को दूसरा और रिखणीखाल को तीसरा स्थान मिला। वहीं अंडर-17 बालक वर्ग में नैनीडांडा ने बाजी मारी, जबकि रिखणीखाल की टीम दूसरे और एकेश्वर की टीम तीसरे स्थान पर रही। हैंडबाल मुकाबलों में भी खिलाड़ियों के बीच कड़ा संघर्ष देखने को मिला। अंडर-19 बालिका वर्ग में पौड़ी की टीम विजेता बनी और थलीसैंण ने दूसरा स्थान हासिल किया। अंडर-19 बालक वर्ग के मुकाबले में पहले राउंड में पौड़ी और दूसरे राउंड में जयहरीखाल की टीम ने जीत दर्ज की। अंडर-14 बालिका वर्ग हैंडबाल में पोखड़ा की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पहला स्थान हासिल किया, जबकि पौड़ी की टीम उपविजेता रही। प्रतियोगिता में पौड़ी जिले के विभिन्न विकासखंडों की टीमें हिस्सा ले रही हैं। खेलों के दौरान खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए शिक्षक और खेल प्रशिक्षक भी मौजूद रहे। इस अवसर पर व्यायाम शिक्षक विनय रावत, धीरेंद्र सिंह, स्टेडियम प्रभारी श्याम सिंह डांगी, धीरेंद्र रावत, महेंद्र सिंह, जयकृत भंडारी, वीरेंद्र सिंह, उमेश चंद्र, बबीता रावत, मालिनी पंथवाल, दिव्या, मोहन सिंह, विनोद पंत, प्रभाकर रावत, सुरेश सिंह, मनोज, बाल गौरव, नीरज पटवाल, जसबीर, अनिल नेगी, सूरज रमोला, सौरभ मिश्र, धमेन्द्र शाह, बृजमोहन भंडारी और सतपाल सिंह असवाल सहित अन्य शिक्षक एवं सहयोगी मौजूद रहे।

सड़क सुविधाओं को बेहतर बनाने पर दिया जोर

जयन्त प्रतिनिधि।कोटद्वार : विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी भूषण ने कहा कि कोटद्वार क्षेत्र में जनसुविधाओं को मजबूत करने के लिए विकास कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। सड़क, पेयजल, बिजली और जल निकासी जैसी मूलभूत जरूरतों को बेहतर बनाने की दिशा में लगातार काम किया जा रहा है। शुक्रवार को विधानसभा अध्यक्ष ने सनेह क्षेत्र में विभिन्न विकास योजनाओं के शिलापट का अनावरण किया। इस दौरान उन्होंने ग्रास्टनगंज, कुंभीचौड़ और सनेह-लालपानी क्षेत्र में मोटर मार्गों पर इंटरलॉकिंग टाइल्स से होने वाले निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। उन्होंने बताया कि राज्य योजना के तहत करीब 2.64 किलोमीटर मोटर मार्गों को इंटरलॉकिंग टाइल्स से विकसित किया जा रहा है। परियोजना पर 135.18 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। निर्माण पूरा होने के बाद क्षेत्र के लोगों को खराब सड़कों और जलभराव की समस्या से राहत मिलने की उम्मीद है। साथ ही आवागमन को भी सुगम बनाया जा सकेगा। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि कोटद्वार विधानसभा क्षेत्र की जरूरतों को देखते हुए विकास योजनाओं को स्वीकृति दिलाने का प्रयास जारी है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के साथ शहर के विभिन्न हिस्सों में बेहतर सड़क संपर्क उपलब्ध कराना जरूरी है, ताकि आम लोगों को रोजमर्रा के आवागमन में परेशानी न उठानी पड़े। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से विकास कार्यों में गुणवत्ता बनाए रखने और निर्धारित मानकों के अनुसार कार्य कराने पर भी जोर दिया। कहा कि योजनाओं का लाभ समय पर आमजन तक पहुंचना चाहिए।

हिंदी दिवस समारोह में सम्मानित होंगी एसडीकेडी की छात्राएं

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : साहित्यिक प्रतिभा और लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाली एसडीकेडी एजुकेशनल एकेडमी पदमपुर सुखरो की दो छात्राओं को प्रदेश स्तर पर सम्मान मिलने जा रहा है। भाषायी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बाद सौम्या और मीनाक्षी का चयन सम्मान के लिए हुआ है।उत्तराखंड भाषा संस्थान की ओर से वर्ष 2026 के लिए प्रदेश के विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न भाषाओं में रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इसमें हिंदी, उर्दू, पंजाबी के साथ ही गढ़वाली, कुमाऊंनी और जौनसारी जैसी लोक भाषाओं में कविता, निबंध और एकांकी लेखन की प्रविष्टियां मांगी गई थीं। कक्षा छह से आठ तक के वर्ग में एसडीकेडी की छात्रा सौम्या ने निबंध लेखन में बाजी मारते हुए प्रदेश स्तर पर पहला स्थान हासिल किया। उन्होंने 'इतना बड़ा आकाश प्रदेश में' विषय पर अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। वहीं विद्यालय की छात्रा मीनाक्षी ने गढ़वाली कविता 'नदिया तेरा बहना' के माध्यम से राज्य स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया। दोनों छात्राओं को 13 सितंबर को देहरादून में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सम्मानित करेंगे। छात्राओं की इस सफलता से विद्यालय में खुशी का माहौल है। प्रधानाचार्य सुमन मैंदाला ने कहा कि विद्यालय में विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ साहित्य और रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास किया जाता है। बच्चों की लेखन क्षमता को निखारने और उनकी प्रतिभा को मंच प्रदान करने के लिए लगातार प्रोत्साहित किया जाता है। विद्यालय के प्रबंधक विमल ध्यानी ने कहा कि विद्यार्थियों के सार्वांगीण विकास के लिए विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। उन्होंने कहा कि सौम्या और मीनाक्षी की प्रदेश स्तर की उपलब्धि विद्यालय के साथ-साथ उनके अभिभावकों के लिए भी गौरव का विषय है।

संक्षिप्त समाचार

जीएमओयू की लग्जरी बस के संचालन पर रोडवेज कर्मियों ने जताई आपत्ति

कोटद्वार रोडवेज डिपो में अधिकारियों को ज्ञापन सौंपते रोडवेज कर्मचारी संयुक्त परिषद के पदाधिकारी।

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : कोटद्वार दिल्ली-गुरुग्राम मार्ग पर जीएमओयू की लग्जरी बस सेवा शुरू होने को लेकर रोडवेज कर्मचारी संयुक्त परिषद मुखर हो गई है। परिषद पदाधिकारियों ने निजी बस सेवा को उत्तराखंड परिवहन निगम के हितों के विपरीत बताते हुए इसके संचालन और परमिट की प्रक्रिया की जांच कराने की मांग की है। परिषद की कोटद्वार डिपो शाखा ने इस संबंध में सहायक महाप्रबंधक को ज्ञापन सौंपा। कर्मचारियों ने कहा कि निजी बसों के बढ़ते संचालन का सीधा असर परिवहन निगम की आय पर पड़ रहा है। ऐसे में नए निजी वाहनों के संचालन से निगम की आर्थिक स्थिति पर और दबाव पड़ने की आशंका है। परिषद पदाधिकारियों का कहना है कि जीएमओयू की ओर से कोटद्वार-दिल्ली-गुरुग्राम रूट पर लग्जरी बस संचालित की जा रही है। यदि इस तरह की सेवाओं को लगातार विस्तार दिया गया तो भविष्य में अन्य राज्यों के लिए भी निजी बसों का संचालन बढ़ सकता है। इसका असर उत्तराखंड रोडवेज की यात्री संख्या और राजस्व पर पड़ने की संभावना है। कर्मचारियों ने सवाल उठाया कि जीएमओयू को अंतरराज्यीय मार्ग पर बस संचालन की अनुमति किन नियमों और प्रावधानों के तहत मिली है। उन्होंने परमिट जारी किए जाने की प्रक्रिया की जांच की मांग करते हुए कहा कि निजी परिवहन सेवाओं के विस्तार पर नियमानुसार निगरानी जरूरी है। परिषद ने चेतावनी दी कि यदि मामले में जल्द उचित कार्रवाई नहीं की गई तो कर्मचारी आंदोलन का रास्ता अपनाने के लिए बाध्य होंगे। उन्होंने परिवहन निगम के हितों को ध्यान में रखते हुए संबंधित अधिकारियों से मामले का परीक्षण कर आवश्यक कदम उठाने की मांग की। ज्ञापन देने वालों में शाखा अध्यक्ष जसविंदर सिंह, महेश चंद्र, जितेंद्र रावत और सुदीप सिंह सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

नवनिर्वाचित जिला सहकारी बैंक अध्यक्षों ने मुख्यमंत्री से की भेंट

जयन्त प्रतिनिधि। देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से शुक्रवार को सचिवालय में प्रदेश के जिला सहकारी बैंकों के नवनिर्वाचित अध्यक्षों ने भेंट की। मुख्यमंत्री ने सभी नवनिर्वाचित अध्यक्षों को शुभकामनाएं देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की। मुख्यमंत्री ने कहा कि सहकारिता राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जिला सहकारी बैंक किसानों, ग्रामीणों, महिलाओं और युवाओं को बैंकिंग सुविधाओं से जोड़ने के साथ ही स्वरोजगार एवं आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उन्होंने अपेक्षा की कि सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारी पारदर्शिता और जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सहकारिता को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करेंगे। मुख्यमंत्री से भेंट करने वालों में जिला सहकारी बैंक देहरादून के अध्यक्ष मंजीत रावत, चमोली के अध्यक्ष गजेंद्र सिंह रावत, जिला सहकारी बैंक गढ़वाल (कोटद्वार) के अध्यक्ष पंकज रावत, टिहरी गढ़वाल के अध्यक्ष सुभाष चंद रमोला, जिला सहकारी बैंक हरिद्वार के अध्यक्ष बिजेंद्र सिंह चौधरी शामिल थे। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री खजान दास, राम सिंह कैड़ा उपस्थित रहे।

|| जय देवलाड़ी माता जी || || जय श्री बाशिक महाराज || || जय श्री बोठा महासू महाराज || || जय श्री पबासी महाराज || || जय श्री चालदा महाराज ||

"जागड़ा (देवनायणी) राजकीय मेला पर्व"

की हार्दिक शुभकामनाएं

पुष्कर सिंह धामी

मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

हनोल मास्टर प्लान की अनुमानित लागत 150 करोड़ रुपये है

दिनांक 13 सितम्बर, 2026 : हनोल (जागड़ा)

दिनांक 14 सितम्बर, 2026 : श्री पशमी चालदा महाराज, शिलाई (सिरमौर)

जागड़ा पर्व हेतु श्रद्धालुओं के लिए परिवहन व्यवस्था:-

- प्रातः 7:00 बजे हरिद्वार से चलने वाली रोडवेज बस हरिद्वार–देहरादून–विकास नगर वाया चकराता– हनोल तक चलेगी।
- प्रातः 8:30 बजे देहरादून से रोडवेज बस देहरादून–मिनस–हनोल तक चलेगी।
- शिमला से रोडवेज बस शिमला–हाटकोटकी–त्यूणी–हनोल तथा पांवटा–सिलाई–त्यूणी–हनोल तक चलेगी।
- प्रातः 7:30 बजे नैरवा से रोडवेज बस अटाल–हनोल तक चलेगी।
- प्रातः 6:30 बजे देहरादून से रोडवेज बस विकास नगर– डामटा–बड़कोट–पुरोला–मोरी–हनोल तक चलेगी।
- प्रातः 9:00 बजे उत्तरकाशी से हनोल तक बसों के संचालन की व्यवस्था की गई है।
- दिनांक 13–14 सितम्बर, 2026 को विशेष बस सेवा त्यूणी से हनोल एवं हनोल से त्यूणी तक चलेगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: 9045599115

धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को समर्पित उत्तराखण्ड राजकीय जागड़ा (देवनायणी) मेला, हनोल एवं श्री पशमी चालदा महाराज, शिलाई (सिरमौर), हिमाचल प्रदेश में पधारकर इस अद्वितीय अवसर का लाभ उठाएं और हमारे साथ पुण्य के भागीदार बनें।

उत्तराखण्ड सचमुच स्वर्ग!

उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद

uttarakhandtourism.gov.in /UttarakhandTourismOfficialPage /UTDBofficial /uttarakhand_tourismofficial Uttarakhand Tourism

महाविद्यालय में संस्कृत मास महोत्सव अंतर्जालीय संगोष्ठी का आयोजन

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार :उत्तराखंड संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित संस्कृत मास महोत्सव , पौड़ी जनपद, अंतर्जालीय संगोष्ठी , हाइब्रिड रुप में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार में दिनांक 10 सितंबर 2026 को बड़े उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का आरंभ माँ शारदा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन तथा पुष्पार्चन, द्वारा किया गया जिसमें महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य प्रोफेसर डी एस नेगी जी ,प्रोफेसर निरंजना शर्मा, डॉ अरविंद अवस्थी, प्रोफेसर प्रताप बिष्ट, डॉ मनीषा सिंह, डॉ ऐश्वर्या राणा तथा उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। तत्पश्चात सरस्वती वंदना दिव्यांशी द्वारा, वैदिक मंगलाचरण नवीन बिष्ट द्वारा तथा स्वागत गीते` मोनिका नौगाई द्वारा प्रस्तुत किया गया ' कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रोफेसर डी एस नेगी जी द्वारा गोष्ठी की सफलता एवं संस्कृत भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए वैदिक एवं आध्यात्मिक चिंतन की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किए गए। कार्यक्रम की प्रस्तावनो` के रूप में उत्तराखंड संस्कृत संस्थान के सचिव प्रोफेसर विनय कुमार विद्यालंकार जी ने अंतर्जालीय संगोष्ठी में उपस्थिते` समस्त महानुभावों को अपना पाथेय प्रदान किया, साथ ही उत्तराखंड संस्कृत संस्थान के शोध अधिकारी डॉक्टर हरीश गुरुरानी जी ने भी अपना अमूल्य समय देकर संस्कृत के अनेक उपनिषदों के ध्येय वाक्यों से` वेदों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया जिससे संस्कृत भाषा का विकास हो सके ।विशिष्ट अतिथि` डॉक्टर सीता जुयाल ने भागवत महापुराण के वृतांतों से भारतीय ज्ञान परंपरा पर अपने विचार व्यक्त किए ' इसी श्रृंखला में संस्कृत संगोष्ठी के सहप्रवक्ता प्रोफेसर अरविंद अवस्थी जी ने दार्शनिक मर्मज्ञता के साथ मौलिक दर्शनशास्त्र पर अपनी ओजस्वी वक्तव्य से सबको ज्ञानरूपी पाथेय प्रदान किया `` संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉक्टर दिनेश चंद्र पांडे जी ने भारतीय परंपराओ में वेद से प्रारंभ करते हुये वैदिक संहिताओं ब्राह्मण , आरण्यक , उपनिषद तथा समकालीन षड्दर्शनों के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय ज्ञान परंपरा को एक श्रृंखला में बांधा। संस्कृत विभाग प्रभारी डॉ मनीषा सिंह ने उपस्थित समस्त प्राध्यापको को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए छात्र छात्राओं द्वारा संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए उत्साहवर्धन किया। संगोष्ठी के जनपद संयोजक तथा संचालक डॉ मनोरथ प्रसाद नौगाई जी ने शांति पाठ द्वारा कार्यक्रम को विश्राम दिया। कार्यक्रम में महाविद्यालय परिवार से डॉ आशाराम बिजल्बाण, डॉ मीरा कुमारी, डॉ एम पी शर्मा, डॉ संदीप कुमार, डॉ प्रमोद सिंह, डॉ जितेंद्र सिंह, डॉ विनोद भंडारी , डॉ बिशन लाल, डॉ राकेश शाह , श्री अरविंद दुदपुड़ी इत्यादि समस्त प्राध्यापक उपस्थित रहे। संगोष्ठी को सफल बनाने में संस्कृत विभाग के प्राध्यापको डॉ मनीषा सिंह, डॉ गीता, डॉ मनोरथ प्रसाद नौगाई` डॉ प्रियम अग्रवाल , तथा तकनीकी व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु डॉ ऐश्वर्या राणा तथा डॉ पवन भट्ट, अरविन्द दुदपुड़ी का विशेष योगदान रहा।

केदारनाथ और बदरीनाथ के रास्ते को जोड़ने वाला पुल तैयार

रुद्रप्रयाग। जनपद रुद्रप्रयाग में श्री केदारनाथ एवं श्री बदरीनाथ धाम मार्ग को जोड़ने वाले निर्माणाधीन पुल का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। पुल की लोड टेस्टिंग भी सफलतापूर्वक पूरी हो गई है। बारिश के कारण कुछ अंतिम कार्य शेष हैं, जिन्हें मौसम अनुकूल होते ही पूरा कर लिया जाएगा।उत्तराखंड में सड़क एवं पुलों के माध्यम से कनेक्टिविटी को लगातार सुदृढ़ किया जा रहा है। इससे जहां प्रदेश में आने वाले श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है, वहीं स्थानीय लोगों के लिए आवागमन, रोजगार और आर्थिक गतिविधियों के नए अवसर भी सृजित हो रहे हैं।

सिरोबगड़ भूस्खलन क्षेत्र का ट्रीटमेंट शुरू

रुद्रप्रयाग। ऋषिकेश–बदरीनाथ हाईवे पर सिरोहबगड़ भूस्खलन क्षेत्र के ट्रीटमेंट का कार्य शुरू हो गया है। करीब 60 वर्षों से भूस्खलन की समस्या से प्रभावित इस क्षेत्र के स्थायी ट्रीटमेंट के लिए करीब 50 करोड़ रुपये की लागत से विभिन्न सुरक्षात्मक एवं स्थिरीकरण कार्य किए जाएंगे। कार्य को नवंबर 2027 तक पूर्ण करने की समयसीमा निर्धारित की गई है।

जिलाधिकारी विशाल मिश्रा ने बताया कि ऋषिकेश–बदरीनाथ मार्ग पर स्थित सिरोहबगड़ क्षेत्र लंबे समय से भूस्खलन की समस्या के कारण यातायात के लिए संवेदनशील बना हुआ है। बरसात के दौरान यहां भूस्खलन होने से मार्ग बाधित होने के साथ ही स्थानीय लोगों, चारधाम यात्रियों एवं अन्य यात्रियों को जाम की समस्या का सामना करना पड़ता है। क्षेत्र के स्थायी ट्रीटमेंट का कार्य शुरू होने से इस समस्या का समाधान होगा। प्रस्तावित ट्रीटमेंट कार्य के तहत क्षेत्र में स्थायी कार्य किया जाना है।

उद्घाटन का इंतजार करती रही बस, 45 मिनट बाद देहरादून रवाना हुई जीएमओयू सेवा

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : कोटद्वार से देहरादून के लिए संचालित होने वाली जीएमओयू की बस पहले दिन ही अव्यवस्थाओं की भेंट चढ़ गई। हालत यह थी कि बस अड्डे पर खेड़ होकर निर्धारित समय बीत जाने के बाद भी मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष का इंतजार करती रही। ऐसे में बस में बैठे यात्री परेशान होने लगे और वह बस को छोड़ अन्य विकल्प खोजने लगे। जिसके बाद कंपनी ने विधानसभा अध्यक्ष के हरी झंडी दिखाने से पहले ही बस को रवाना कर दिया। शुक्रवार को जीएमओयू ने कोटद्वार-देहरादून के बीच नई बस सेवा शुरू की। बस सेवा शुरु होने से लोगों को काफी राहत मिली। पहली बार संचालित हो रही इस बस को विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूडी भूषण ने हरी झंडी दिखानी थी। लेकिन, तय समय पर भी विधानसभा अध्यक्ष

जीएमओयू मुख्यालय नहीं पहुंच पाई। ऐसे में बस काफी देर तक मुख्य अतिथि का इंतजार करती रही। करीब 45 मिनट बीतने के बाद यात्रियों का धैर्य जवाब देने लगा। कुछ यात्री बस से उतरकर अन्य साधनों की तलाश में निकल गए, जबकि कुछ यात्री उत्तराखंड परिवहन निगम की बस से हरिद्वार की ओर रवाना हो गए। बस में मौजूद यात्रियों ने भी तत्काल सेवा शुरू करने की मांग उठाई। इस दौरान कंपनी से जुड़े कुछ सदस्य भी यात्रियों की परेशानी को देखते हुए बस को रवाना करने के पक्ष में नजर आए। आखिरकार करीब पौने तीन बजे कंपनी अध्यक्ष गजे सिंह रौथाण ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच बस को देहरादून के लिए रवाना किया। पहले दिन ही निर्धारित समय से देरी होने के कारण यात्रियों में नाराजगी देखने को मिली। जीएमओयू के अनुसार अब यह बस सेवा नियमित रूप से संचालित होगी। बस प्रतिदिन सुबह सात बजे कोटद्वार से देहरादून के लिए रवाना होगी और दोपहर दो बजे देहरादून से कोटद्वार के लिए वापसी करेगी।

एक नजर

पांच ऐतिहासिक धारे–नौलों को मिलेगा नया जीवन

उत्तरकाशी। जनपद की सदियों पुरानी जल विरासत को संरक्षित करने की दिशा में स्प्रिंग एंड रिवर रिजुविनेशन अथॉरिटी (सारा) ने विशेष पहल शुरू की है। जिले के ऐतिहासिक, पौराणिक एवं धार्मिक महत्व वाले पांच पारंपरिक धारे–नौलों का संरक्षण एवं पुनरुद्धार किया जाएगा। इसके लिए विभाग ने लोगों से ऐसे प्राचीन स्त्रोतों की प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने को कहा है।सारा के उपनिदेशक सिद्धार्थ श्रीवास्तव ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य जल स्त्रोतों का पुनरुद्धार करना ही नहीं बल्कि उनसे जुड़ी ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित करना है। कई पारंपरिक धारे–नौले आज अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे जल स्त्रोतों को चिह्नित कर उन्हें फिर से उपयोगी और संरक्षित स्वरूप में लाने की योजना है। विभाग ने जनपदवासियों से आह्वान किया कि उनके क्षेत्र में यदि कोई प्राचीन धारा या नौला है जिसका इतिहास या पौराणिक महत्व हो तो उसकी जानकारी सारा को दें।

शिक्षकों के रिक्त पद एक सप्ताह में नहीं भरे तो होगा आंदोलन

नंदानगर। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज नंदानगर में प्रवक्ता के पांच और सहायक अध्यापक का एक पद रिक्त होने से अभिभावकों में नाराजगी है। अभिभावकों ने खंड शिक्षाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर एक सप्ताह में सभी रिक्त पदों पर शिक्षकों की तैनाती की मांग की है। मांग पूरी नहीं होने पर आंदोलन शुरू करने की चेतावनी दी है।विद्यालय में एसएमसी और पीटीए की बैठक में अभिभावकों ने कहा कि विद्यालय में करीब 350 छात्राएं हैं। हिंदी, अंग्रेजी, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान के प्रवक्ता तथा विज्ञान के सहायक अध्यापक का पद रिक्त है। इससे छात्राओं की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। इस मौके पर सोबती देवी, ग्राम प्रधान कुमजुग चंद्रकला देवी, देवकी देवी, नंदूराम, सरोजनी देवी, कविता देवी, देवेश्वरी देवी, लक्ष्मी देवी, भागा देवी और शीला देवी आदि मौजूद रहे।

गौरीकुंड में सफाई न होने पर जताई नाराजगी

फाटा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. पारूल गोयल ने शुक्रवार को केदारनाथ यात्रा मार्ग की चिकित्सा इकाई सोनप्रयाग और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र गौरीकुंड का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने दवा, आकस्मिक सेवाओं, साफ–सफाई और अन्य स्वास्थ्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। गौरीकुंड अस्पताल में साफ–सफाई संतोषजनक नहीं मिलने पर सीएमओ ने नाराजगी जताई। उन्होंने सफाईकर्मी और वार्ड ब्वॉय को नियमित रूप से सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही जीवनरक्षक दवाओं का पर्याप्त स्टॉक, आकस्मिक सेवाओं और फायर सेफ्टी व्यवस्थाओं को दुरुस्त रखने को कहा। कहा कि मोबाइल टावर के कारण भवन की छत से हो रही सीलन के स्थायी समाधान के लिए संबंधित कंपनियों को पत्र भेजकर टावर हटाने की कार्रवाई की जाएगी।

14 बाल वैज्ञानिकों का जिला स्तर के लिए चयनित

गुप्तकाशी। द्वितीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रीमियर लीग–2026 की ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता पीएमश्री अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज गुप्तकाशी में हुई। प्रतियोगिता में 25 विद्यालयों के करीब 90 बाल वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया। लिखित एवं मौखिक विज्ञान प्रश्नोत्तरी के आधार पर सात जूनियर और सात सीनियर वर्ग के प्रतिभागियों का जिला स्तर के लिए चयन हुआ। सीनियर वर्ग में पीएमश्री अटल उत्कृष्ट राइंका गुप्तकाशी के आदित्य और अभिषेक, राइंका नारायणकोटी के आरव और प्रियम्वत, जेवीएनएस गुप्तकाशी के ईशान्त सेमवाल, राइंका ऊखीमठ के दीक्षान्त तथा एसवीएम गुप्तकाशी के निकेश चयनित हुए।

प्रदेश में 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर, 2026 तक चलेगा सेवा संकल्प अभियान

विकसित भारत के संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने में प्रत्येक देशवासी की महत्वपूर्ण भूमिका

जयन्त प्रतिनिधि। देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को सचिवालय में प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि प्रदेश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर, 2026 तक सेवा संकल्प अभियान का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने कहा सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से सेवा, जनभागीदारी, संवाद और नवाचार को केंद्र में रखते हुए नागरिकों को 'विकसित भारत 2047' के संकल्प से जोड़ा जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में अभियान के अंतर्गत 11 प्रमुख कार्यक्रम प्रस्तावित हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों, युवाओं, महिलाओं, लाभार्थियों, अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों और नागरिकों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही राज्य सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों को भी जन-

जन तक पहुंचाया जाएगा। केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं से नागरिकों के जीवन में आए वास्तविक बदलाव और लाभार्थियों की कहानियों को भी प्रमुखता से सामने लाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि ह्यआशीर्वाद का दीया' कार्यक्रम के तहत सरकारी योजनाओं के केन्द्र, गैस वितरण केंद्रों, राशन दुकानों, प्रमुख धार्मिक स्थलों, गंगा तट, आदि पर दीप प्रज्वलन एवं सामूहिक कार्यक्रम किए जाएंगे। नए मेडिकल कॉलेज, बांध/पुल, अमृत सरोवर, जन औषधि केंद्र जैसे स्थलों पर भी सामूहिक कार्यक्रम किए जाएंगे। इसमें विभिन्न सामाजिक संगठनों की सहभागिता भी रहेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'मेरे सपनों का भारत-चित्र सेवा' के अंतर्गत प्रदेश के शैक्षणिक संस्थानों में 'विकसित भारत' के संकल्प तथा 25 वर्षों के कार्यों और उपलब्धियों पर आधारित चित्रकला, निबंध एवं भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। चयनित चित्र विद्यालयों में प्रदर्शित किए जाएंगे तथा अभिभावकों और नागरिकों को भी इन प्रदर्शनियों से जोड़ा जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि नमो सेवा-अनकही कहानियां के माध्यम से देश की उपलब्धियों पर आधारित नाटकों का विद्यालयों में मंचन किया जाएगा। साथ ही आंगन मिलन सेवा के अंतर्गत आंगनवाड़ी केंद्रों पर बच्चों, अभिभावकों, आंगनवाड़ी एवं आशा कार्यकर्ताओं की सहभागिता से गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। मातृ-बाल स्वास्थ्य, पोषण तथा मातृ-शिशु कल्याण से संबंधित जानकारी पर विशेष जोर रहेगा। अभिभावकों को व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित करने की व्यवस्था भी की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि सेवा की कहानियों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं राज्य की योजनाओं से नागरिकों के जीवन में आए वास्तविक बदलाव को सामने लाया जाएगा। भाषण, चित्रकला और कहानियों के माध्यम से इन बदलावों को जनता तक पहुंचाने का काम किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि सेवा के रंग, राष्ट्र के संग कार्यक्रम में रंगोली के माध्यम से विकसित भारत 2047 की दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया जाएगा। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री खजान दास, राम सिंह कैड़ा एवं महानिदेशक सूचना बंशीधर तिवारी मौजूद रहे।

जय माता इंद्रामति के जयकारों से गूंजा क्षेत्र

गोपेश्वर। टेड़ा–खंसाल क्षेत्र की आराध्य देवी माता इंद्रामति की दिवारा यात्रा रात्रि प्रवास के लिए पाडुली गांव पहुंच गई। शुक्रवार को सुबह माता की डोली की विशेष पूजाएं हुईं। मुख्य यजमान यशवंत और मोहन बर्त्वाल ने संकल्प पूजाएं हुईं। पंडित दुर्गा प्रसाद मैठाणी सहित अन्य आचार्य ब्राह्मणों ने दुर्गा पाठ किया और डोली का श्रृंगार किया। पूर्वाह्न 11 बजे डोली ने भक्तों को दर्शन दिए। माता ने अवतारी पुरुष पर अवतरित होकर भक्तों को दर्शन दिए। इस मौके पर विनोद भंडारी, जगदीश त्रिपाठी, सोनम, पूनम गैरोला, लक्ष्मी आदि मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस पर होगा महायज्ञ

ऋषिकेश। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर 17 सितंबर को त्रिवेणी घाट परिसर में 1008 कुंडीय महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। देवभूमि के जनकल्याण और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दीर्घायु की कामना के लिए आयोजित होने वाले इस महायज्ञ में संत समाज, जनप्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं के साथ ही स्थानीय नागरिक भी भाग ले सकेंगे। त्रिपुरा पीठाधीश्वर हरिओम महाराज के नेतृत्व में होने वाले महायज्ञ को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। मेयर शंभू पास्–वान ने बताया कि त्रिवेणी घाट परिसर में पहली बार 1008 कुंडीय हवन–यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

बंदरों के उत्पात से परेशान, ईओ को दिया ज्ञापन

डोईवाला। नगरीय क्षेत्रों में बंदरों का उत्पात बढ़ता जा रहा है। बंदरों का झुंड घरों, गलियों और आसपास के क्षेत्रों में लगातार घूम रहा है। इनके कारण बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों में भय है। समस्या के समाधान के लिए सभासद प्रतिनिधि प्रकाश कोठारी ने नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी को ज्ञापन दिया है। प्रेमनगर बाजार, मिल रोड और रेलवे रोड पर भी बंदरों की समस्या बनी रहती है। सभासद प्रतिनिधि प्रकाश कोठारी ने बताया कि ज्ञापन देकर मांग की गई है कि विभाग की विशेषज्ञ टीम को बुलाकर बंदरों को पकड़ने और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने की कार्रवाई की जाए ताकि वार्डवासियों को राहत मिल सके। नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी एमएल शाह ने बताया कि समस्या को गंभीरता से लिया जा रहा है।

चुनावी सरगर्मी बढ़ी, छात्राएं संभाल रहीं प्रचार की कमान

ऋषिकेश। श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय के पं. ललित मोहन शर्मा परिसर, ऋषिकेश में छात्रसंघ चुनाव की तिथियों की घोषणा होते ही चुनावी माहौल पूरी तरह गरमा गया है। तिथियों के एलान के साथ ही भावी प्रत्याशी और उनके समर्थकों ने चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। हालांकि इस बार के प्रचार अभियान में छात्राएं विशेष रूप से अग्रणी भूमिका निभाती नजर आ रही हैं।विभिन्न छात्र संगठनों और निर्दलीय प्रत्याशियों की समर्थक छात्राएं प्रचार में लगातार सक्रिय बनी हुई हैं। कक्षाओं और विभागों में सघन जनसंपर्क साधने के साथ–साथ छात्राओं की टोलियां शहर के आसपास के क्षेत्रों में विद्यार्थियों के घर–घर जाकर भी वोट मांग रही हैं। वहीं, दूसरी ओर, छात्राओं में टिकट की दावेदारी के संबंध में भी भारी कश्मकश बनी हुई है। विभिन्न संगठनों से टिकट पाने के लिए दावेदार छात्राएं अपनी मजबूत पकड़ साबित करने में जुटी हुई हैं। ऑफलाइन प्रचार और घर–घर जनसंपर्क के साथ–साथ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिये भी प्रचार को धार दी जा रही है। वहीं, विवि प्रशासन ने चुनाव को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से संपन्न कराने के लिए कमर कस ली है।

सड़कों के दोनों ओर जमी झाड़ियों से बना खतरा

जखोली। ब्लॉक की रतनगढ़–रहड़, गोरपा कुरछोला, सुमाड़ी–सिलगांव–सकलाना मार्ग पर दोनों तरफ झाड़ियां होने से विद्यालय जाने वाले छात्र छात्राएं व राहगीरों को जंगली जानवरों से खतरा बना हुआ है। वन क्षेत्राधिकारी दक्षिणी जखोली रेंज हरीश थपलियाल ने बताया कि जंगली जानवरों के छुपने के लिए स्थान झाड़ियां सबसे अच्छा विकल्प हैं और मानव वन्य जीव संघर्ष से बचाव के लिए अपने आसपास की झाड़ियो को बढ़ने न दें। श्री वासुदेव टैक्सी सूमो यूनियन के अध्यक्ष हरीश पुंडीर ने कहा बरसात में सड़कों के दोनों ओर झाड़ियां उगी हैं जिससे मोड़ों पर सामने आ रहे वाहन नहीं दिख रहे हैं यह दुर्घटना का कारण बन सकते हैं। वही पीएमजीएसवाई के अधिशासी अभियंता पवन कुमार ने कहा कि बरसात रुकते ही झाड़ियों को साफ करवाया

जाएगा। वहीं लोनिवि के सहायक अधिशासी अभियंता संजीव कुमार सैनी ने कहा कि लोनिवि की ओर से लगातार सड़कों से झाड़ियों को काटने का काम चल रहा है।

संक्षिप्त समाचार

मदद से पीछे हटे अमेरिका जैसे देश, ट्रंप के फैसले से राहत कार्यों को लगा बड़ा झटका

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल में अगस्त के अंत में ग्लेशियर टूटने से आई सदी की सबसे भीषण बाढ़ और भूस्खलन के दो हफ्ते बाद भी राहत कार्यों में भारी लाचारी देखने को मिल रही है। नेपाल और पड़ोसी तिब्बत में 1,300 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और करीब 5,000 लोग अब भी लापता हैं। इस मानवीय संकट के बीच अमेरिकी विदेशी सहायता एजेंसी यूएस एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट (यूएसएआईडी) का पूरी तरह गायब रहना राहत और बचाव कार्यों पर भारी पड़ रहा है। ट्रंप प्रशासन ने पिछले साल की शुरुआत में यूएसएआईडी को बंद कर दिया था सीधा असर अब जमीन पर दिख रहा है। नेपाल में अमेरिकी फंड से चलने वाले कई गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को अपने कार्यक्रम बंद करने पड़े थे, जिससे अचानक आई इस आपदा के समय वे त्वरित राहत सामग्री और संसाधन उपलब्ध कराने में असमर्थ साबित हो रहे हैं। भारत ने बुधवार को विनाशकारी बाढ़ की मार झेल रहे नेपाल के लिए मानवीय सहायता की 7वीं खेप भेजी। भारतीय वायुसेना के विशेष सी-17 परिवहन विमान के जरिये 35 टन सामान और उपकरण भेजे गए हैं। भारत लगातार बाढ़ प्रभावित नेपाल को राहत सामग्री और आवश्यक दवाएं भेज रहा है। 2015 का भूकंप : भूकंप के 48 घंटे के भीतर अमेरिका ने 128 सदस्यीय विशेषज्ञ आपदा प्रतिक्रिया दल भेजा था और तुरंत 1 करोड़ डॉलर की मानवीय मदद का ऐलान किया था।

ईरान युद्ध का असर: ट्रंप बोले- चुनाव के बाद ही गिरेंगे तेल के दाम; रिपब्लिकन खेमे की क्यों बढ़ी चिंता

वाशिंगटन,एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को कहा कि ईरान युद्ध की वजह से बढ़े तेल के दाम जल्द नीचे आने की उम्मीद नहीं है। उन्होंने कहा कि तेल की कीमतों में गिरावट अमेरिकी मध्यावधि चुनाव के बाद ही शुरू हो सकती है। बुधवार को तेल की कीमतों में 3 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट कच्चा तेल 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गया। जुलाई के बाद पहली बार ऐसा हुआ है। इजराइल और अमेरिका की ओर से ईरान के खिलाफ चल रहे युद्ध के बीच दोनों तरफ से हमले तेज हुए हैं। ट्रंप ने कहा, चुनाव के तुरंत बाद तेल की कीमतें तेजी से नीचे जाएंगी। उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि इसमें मध्यावधि चुनाव से थोड़ा ज्यादा समय लग सकता है। ट्रंप यह बात डलास जाने से पहले पत्रकारों से बातचीत में कह रहे थे। वह वहां मध्यावधि चुनाव के लिए रिपब्लिकन पार्टी के सम्मेलन में जाने वाले थे।

फिलहाल शामिल होने का फैसला टाल सकता है बांग्लादेश, रणनीतिक शर्तों पर अटकी बात

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश ने सऊदी अरब, तुर्किये और पाकिस्तान के मक्का रक्षा गठबंधन में शामिल होने का दरवाजा खुला रखा है। हालांकि सैन्य शर्तों और जिम्मेदारियों का पूरा खाका सामने आने तक वह अंतिम फैसला टालने के मूड में दिखाई दे रहा है। इसके तहत किसी एक सदस्य पर हमला बाकी सदस्यों के खिलाफ भी हमला माना जाएगा। बांग्लादेशी रणनीतिक हलकों में सवाल है कि किसी सदस्य पर हमले की स्थिति में ढाका की सैन्य प्रतिबद्धता किस सीमा तक होगी। रिटायर्ड मेजर जनरल फजले इलाही अकबर ने अखबार प्रोथोम आलो में कहा कि सदस्यता पर फैसला लेने से पहले समझौते की हर शर्त और धारा की गहन जांच होनी चाहिए। साथ ही संसद, राजनीतिक दलों और अन्य हितधारकों से व्यापक मशविरा होना चाहिए। विदेश राज्य मंत्री शमा ओबैद ने कहा कि ढाका स्थिति का आकलन कर रहा है और किसी भी फैसले में राष्ट्रीय हित प्राथमिकता होगी। विदेश राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने पहले कोई जोखिम न दिखने की बात कही थी। विदेश मंत्री खलीलुर रहमान संसद में कह चुके हैं कि अगर मौजूदा सदस्य बांग्लादेश को शामिल करना चाहें तो ढाका प्रस्ताव पर सकारात्मक विचार करेगा। जहां एक तरफ इसके समर्थक इसे सैन्य क्षमता मजबूत करने का अवसर मानते हैं। वहीं पूर्व राजनयिक एम. हुमायूं कबीर ने चेताया है कि इस गठबंधन में शामिल होना बांग्लादेश की पांच दशक पुरानी संतुलित और गैर-गुटीय विदेश नीति में बदलाव होगा। सबसे संवेदनशील पहलू पाकिस्तान है। सदस्यता लेना सीधे द्विपक्षीय सैन्य गठबंधन में शामिल होना नहीं होगा, लेकिन दोनों देशों की सेनाओं और सुरक्षा प्रतिष्ठानों के बीच सहयोग बढ़ सकता है। इससे ढाका की विदेश नीति पर सवाल खड़े हो सकते हैं।

अमेरिका में भारतीय दंपती की दरियादिली: एआई को बढ़ावा देने के लिए कॉलेज को दिए 191 करोड़, आंध्र से है कनेक्शन

वाशिंगटन, एजेंसी। भारतीय मूल के एक दंपती ने टेक्सास में अपनी पुरानी यूनिवर्सिटी अल्मा मेटर को 20 मिलियन डॉलर का दान दिया है। इससे संस्थान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और एडवांस्ड एनालिटिक्स की पढ़ाई को बढ़ावा मिलेगा और 'अमेरिकन ड्रीम' को साकार करने में अप्रवासियों के योगदान को भी रेखांकित किया जाएगा। एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अनुराधा और विकास सिन्हा ने यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास को 20 मिलियन डॉलर यानी कि भारतीय रुपयों में 191 करोड़ से ज्यादा का दान दिया है।

अनुराधा और विकास सिन्हा के नाम पर बनेगा नया कॉलेज

इस तोहफे के सम्मान में, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास 'अनुराधा और विकास सिन्हा कॉलेज ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड एडवांस्ड एनालिटिक्स' की स्थापना करेगा। यह कॉलेज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटेलिजेंट सिस्टम और डेटा एनालिटिक्स पर केंद्रित एक एकेडमिक और रिसर्च हब के तौर पर काम करेगा। यह एआई, साइबर सिक्योरिटी, डेटा साइंस, एडवांस्ड एनालिटिक्स, हेल्थ इंफॉर्मेटिक्स, इंफॉर्मेशन साइंस, लाइब्रेरी साइंस और लर्निंग टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता को एक साथ लाएगा।

यूएनटी से सिन्हा परिवार का पुराना जुड़ाव : यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास में सिन्हा परिवार का निवेश यूनिवर्सिटी के साथ उनके

जुड़ाव के साथ-साथ बढ़ता गया है। 2024 में, उन्होंने 'अनुराधा और विकास सिन्हा डिपार्टमेंट ऑफ डेटा साइंस' की स्थापना के लिए तोहफा दिया, साथ ही स्कॉलरशिप, फैकल्टी, रिसर्च और विशेष पहलों को सपोर्ट करने के लिए एंडोमेंट भी दिए। एक साल बाद, उन्होंने एक और बड़ा तोहफा दिया और 'सिन्हा इनोवेशन लैब फॉर डेटा साइंस' की स्थापना की।

'शिक्षा ने हमारे लिए दरवाजे खोले हैं' : दान के बाद मीडिया से बात करते विकास सिन्हा ने कहा, 'शिक्षा ने हमारे जीवन भर हमारे लिए दरवाजे खोले हैं, और हम दूसरों के लिए भी उन दरवाजों को खुला रखना चाहते हैं।' यही एक बड़ी वजह है कि अनु और मुझे इस बात पर इतना पक्का भरोसा है कि यूएनटी छात्रों के लिए क्या कुछ मुमकिन बना सकता है, जिसमें वे छात्र भी शामिल हैं जो शायद किसी दूसरे देश से वही महत्वाकांक्षा और शिक्षा में वही विश्वास लेकर यहां आते हैं, जो कभी हमारे पास हुआ करता था।' हमारे लिए, यह तोहफा उस अवसर को आगे बढ़ाने और यह मानने के बारे में है कि अप्रवासी सिर्फ 'अमेरिकन ड्रीम' में हिस्सा ही नहीं लेते, वे इसे बनाने में मदद भी करते हैं।'

एआई के भविष्य को आकार देने वालों को तैयार करेगा यूएनटी : उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारी पीढ़ी की अहम टेक्नोलॉजी में से एक होगी, और इसके भविष्य को आकार देने वाले लोगों को तैयार करने में यूनिवर्सिटी की अहम भूमिका है। यूएनटी के विजन के बारे में जो बात हमें उत्साहित करती है, वह यह है कि यह छात्रों को सिर्फ एआई का इस्तेमाल करना सिखाने से कहीं आगे जाएगा। यह उन्हें इंटेलिजेंट सिस्टम बनाने, समझने, उन पर सवाल उठाने, उन्हें चलाने और जिम्मेदारी से इस्तेमाल करने के लिए तैयार करेगा। इससे इंटेलिजेंट सिस्टम बनाने वाले और उनकी देखभाल करने वाले, दोनों तरह के लोग तैयार होंगे।

छह स्थायी फंड बनाए जाएंगे : 20 मिलियन डॉलर का यह दान छह स्थायी फंड (एंडोमेंट) बनाएगा, जो कॉलेज की लीडरशिप, छात्रों की स्कॉलरशिप, एंडोव्ड प्रोफेसरशिप, एंटरप्रेन्योरशिप और इनक्यूबेशन, एडवांस्ड रिसर्च और नई टेक्नोलॉजी को सपोर्ट करेंगे।

दो एकेडमिक डिवीजन में बांटा जाएगा कॉलेज : कॉलेज को दो एकेडमिक डिवीजन में बांटा जाएगा: 'डिवीजन ऑफ एप्लाइड इंटेलिजेंस एंड इंफॉर्मेटिक्स', जो इंटेलिजेंट सिस्टम बनाने और उन्हें लागू करने पर केंद्रित होगा; और 'डिवीजन ऑफ इंफॉर्मेशन एंड लर्निंग एप्लीकेशन', जो इस बात पर केंद्रित होगा कि जानकारी और इंटेलिजेंट सिस्टम इंसानी और संस्थागत संदर्भों में कैसे काम करते हैं।

एआई और डेटा साइंस रिसर्च को मिलेगा बढ़ावा : बयान में कहा गया है कि कॉलेज में 'एप्लाइड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस इंस्टीट्यूट' भी होगा, जो यूएनटी में एआई और एनालिटिक्स रिसर्च और एजुकेशन को जोड़ेगा और इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, साझा इंफ्रास्ट्रक्चर, बाहरी रिसर्च फंडिंग और इंडस्ट्री पार्टनरशिप के लिए मौके पैदा करेगा।

आंध्र प्रदेश से अमेरिका तक का सफर : आंध्र प्रदेश के कुरनूल में श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी और जी पुल्ला रेड्डी इंजीनियरिंग कॉलेज में सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद, विकास और अनुराधा आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका आए और फ्लोरिडा अटलांटिक यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट डिग्री हासिल की। बाद में विकास ने नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी में अपनी पढ़ाई जारी रखी और 2023 में यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास से पीएचडी पूरी की। विकास अभी ब्रॉडकॉम में मेनफ्रेम सॉफ्टवेयर डिवीजन के वाइस प्रेसिडेंट हैं।

भारतीय कंपनियों ने डेटा चुराया: अमेरिकी सीनेटरों ने की ब्लैक लिस्ट में डालने की मांग, क्या है पूरा मामला

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी सीनेटरों ने ट्रंप प्रशासन को पत्र लिखकर भारत की तीन कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। डेमोक्रेटिक सीनेटर रॉन वाइडेन और शेल्डन व्हाइटहाउस तथा रिपब्लिकन पैट हैरिगन ने कॉमर्स सेक्रेटरी हॉवर्ड लटनिक से सनकिस्ड ऑर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड, बेलट्रॉक्स लिमिटेड और साइबररूट लिमिटेड के खिलाफ कार्रवाई करने का आग्रह किया है। उनका कहना है कि इन कंपनियों ने हजारों अमेरिकियों और अमेरिकी कंपनियों का डेटा हैक करके चुराया।

15 साल से अमेरिकी नागरिकों को निशाना बनाने का आरोप : वाइडेन, हैरिगन और व्हाइटहाउस ने लटनिक को लिखे पत्र में कहा,'भारत स्थित कई साइबर-मर्सिनरी ग्रुप (किराये के साइबर हैकर ग्रुप) 15 से अधिक वर्षों से अमेरिकी नागरिकों, व्यवसायों और उनका प्रतिनिधित्व करने वाले वकीलों के खिलाफ टारगेटेड जासूसी कर रहे हैं।' सीनेटरों ने कहा कि रॉयटर्स और द सिटिज़न लैब की जांच के अनुसार, इन कंपनियों ने चल रहे मुकदमों को प्रभावित करने के लिए प्राइवेट इक्विटी फर्मों, फार्मास्युटिकल कंपनियों और प्रमुख अमेरिकी लॉ फर्मों के 1,000 से अधिक वकीलों को निशाना बनाकर बड़े पैमाने पर हैकिंग अभियान चलाए।

कतर सरकार के इशारे पर काम करने का आरोप : उन्होंने कहा कि इस बात के सबूत हैं कि ये समूह कतर सरकार के इशारे पर काम करते थे। वर्ल्ड कप बोली के विरोधियों और हाउस परमानेंट सेलेक्ट कमिटी ऑन इंटेलिजेंस के पूर्व रिपब्लिकन चेयरमैन के परिवार को भी निशाना बनाया। सीनेटरों ने कहा,'इस सुरक्षा खतरे को और बढ़ाते हुए, इन साइबर मर्सिनरी और उनके सहयोगियों ने प्रमुख अमेरिकी मीडिया संगठनों की खोजी रिपोर्टिंग को सेंसर करने के लिए ग्लोबल लॉफेयर का आक्रामक अभियान चलाया है।' यह समन्वित प्रयास विदेशी संस्थाओं को विदेशी अदालतों का उपयोग करके अमेरिकी जनता को उनके अपने देश के लिए साइबर खतरों के बारे में अंधेरे में रखने की अनुमति देता है और अमेरिकी नागरिकों के मौलिक संवैधानिक अधिकारों को कमजोर करता है। सीनेटरों ने आरोप लगाया कि इन्हीं कंपनियों ने विदेशी अदालतों का दुरुपयोग करके अपने हैकिंग अभियानों के बारे में हो रही रिपोर्टिंग को सेंसर करने की भी कोशिश की। उन्होंने कहा कि अपनी आलोचना को दबाने और अपने अवैध हैकिंग अभियानों से जुड़े तथ्यों को छिपाने के लिए इन भारतीय कंपनियों ने गूगल, मेटा, माइक्रोसॉफ्ट और द न्यू यॉर्कर सहित अमेरिकी टेक्नोलॉजी और मीडिया कंपनियों के खिलाफ मुकदमे दायर कर रखे हैं।

फिलीपींस में समंदर के बीच नाव बनी आग का गोला: पांच यात्रियों की मौत और 87 लापता

मनीला, एजेंसी। फिलीपींस में बुधवार को एक यात्री फेरी में अचानक आग लग गई। हादसा देश के पश्चिमी हिस्से में समुद्र में हुआ। आग लगने के बाद बड़ी संख्या में लोग लापता हो गए। फिलीपींस कोस्ट गार्ड के मुताबिक, हादसे में अब तक कम से कम पांच लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 42 लोगों को सुरक्षित बचाया गया है। बचाव अभियान अभी जारी है, इसलिए लापता लोगों की संख्या आगे बदल सकती है। फिलीपींस कोस्ट गार्ड की प्रवक्ता कमोडोर नोएमी कायाबायब ने बताया कि फेरी पर कुल 134 लोग सवार थे। इनमें 117 यात्री और 17 चालक दल के सदस्य शामिल थे। आग लगने के बाद कई लोगों का पता नहीं चल पाया। अधिकारियों की ओर से फिलहाल 87 लोगों के लापता होने की जानकारी दी गई है, लेकिन बचाव और तलाश का अभियान जारी रहने के कारण यह आंकड़ा बदल सकता है। एमवी जून एस्टर मनीला से रवाना हुई थी। जब फेरी पलावन प्रांत में कोरोन के पास समुद्र में थी, उसी दौरान बुधवार को उसमें आग लग गई। आग लगने के बाद फेरी पर सवार लोगों के बीच अफरातफरी की स्थिति बनी। हादसे की जगह पश्चिमी फिलीपींस के समुद्री क्षेत्र में बताई गई है। उपलब्ध जानकारी में आग लगने की वजह के बारे में कोई कारण नहीं बताया गया है। कोस्ट गार्ड के मुताबिक, अब तक 42 लोगों को बचाया जा चुका है, जबकि 87 लोग लापता हैं। हालांकि, अधिकारियों ने साफ किया है कि यह अंतिम आंकड़ा नहीं है। कोस्ट गार्ड की टीमें लगातार बचाव अभियान चला रही हैं और लोगों की तलाश की जा रही है। घटनास्थल की तस्वीरों में कोस्ट गार्ड के जवान बचे हुए लोगों को लाइफ जैकेट फेंकते हुए दिखाई दिए, जबकि पीछे फेरी जल रही थी। छोटी नावों के जरिए भी बचे हुए लोगों को कम गहरे पानी तक लाया गया। फिलीपींस के द्वीपसमूह में फेरी परिवहन का एक आम जरिया है। तूफ़ान, खराब रखरखाव वाली नावें, क्षमता से ज़्यादा लोगों का सवार होना और सुरक्षा नियमों का ठीक से पालन न होना जैसी वजहों से समुद्री दुर्घटनाएं होती रहती हैं।

'कॉकरोच बन जाऊं, शायद जिंदगी बेहतर हो': विजय माल्या का बयान; भगोड़ा कहे जाने पर अब क्या बोले

लंदन, एजेंसी। भगोड़े आर्थिक अपराधी घोषित किए जा चुके कारोबारी विजय माल्या ने एक बार फिर भारत सरकार पर अपने साथ अन्याय करने का आरोप लगाया है। लंदन में रह रहे माल्या ने बुधवार देर रात सोशल मीडिया पर लगातार कई पोस्ट किए। उन्होंने कहा कि उन्हें अब भी अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। इसी दौरान उन्होंने लिखा, 'जितने अन्याय मैंने झेले हैं और अब भी झेल रहा हूं, उसे देखते हुए सोचता हूं कि क्या मुझे कॉकरोच बन जाना चाहिए। शायद कॉकरोच की तरफ जिंदगी बेहतर हो।'

14,000 करोड़ की रिकवरी को लेकर माल्या का क्या दावा : विजय माल्या ने प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की ओर से बॉम्बे हाईकोर्ट में दाखिल एक हलफनामे का हवाला दिया। उनका दावा है कि ईडी ने इसमें स्वीकार

किया था कि उनसे करीब 14,000 करोड़ से ज्यादा की रकम बरामद की गई और 2021 में यह रकम उन बैंकों को दी गई, जिनका पैसा उनके ऊपर बकाया था। विजय माल्या ने कहा कि अगर लोगों को उनकी बात पर भरोसा नहीं है तो वे उनके बयान के बजाय ईडी के अदालत में दिए हलफनामे को देखें। उन्होंने लिखा कि हलफनामे में 2021 में बैंकों को 14,000 करोड़ से ज्यादा दिए जाने की बात कही गई है।

भारत लौटने को लेकर माल्या ने क्या सफाई दी : इससे पहले विजय माल्या ने कहा था कि वह भारत आने से इनकार करने वाले 'भगोड़े' नहीं हैं। उनका दावा है कि वह 1992 से ब्रिटेन के स्थायी निवासी हैं और फिलहाल कानूनी तौर पर ब्रिटेन छोड़ने से रोके गए हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की ओर से उनके खिलाफ की गई कार्रवाई के बाद यह पूरा मामला शुरू हुआ। विजय माल्या ने यह भी कहा कि बैंक को पैसा वापस किया जाना उनकी भारत में शारीरिक मौजूदगी पर निर्भर नहीं है। विजय माल्या ने अपनी पोस्ट में एक कथित अकाउंट स्टेटमेंट की तालिका भी साझा की और खुद को गलत तरीके से भगोड़ा बताए जाने का आरोप लगाया। उन्होंने सवाल किया कि क्या उन्हें अब भी उसी तरह पेश किया जाना चाहिए, जबकि उनके मुताबिक बैंकों का पैसा वापस किया जा चुका है। उन्होंने मीडिया कवरेज पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि किसी पत्रकार की खबर की शुरुआत में ही उन्हें 'धोखाधड़ी करने वाला' या 'फ्रॉडस्टर' बताने के बजाय यह पूछा जाना चाहिए कि उन्हें अपना पैसा वापस कब मिलेगा। अक्टूबर 2025 में वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में बताया था कि भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 के तहत कुल 15 लोगों को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया है। इनमें विजय माल्या और नीरव मोदी समेत कई चर्चित नाम शामिल हैं। वहीं, फरवरी 2026 में बॉम्बे हाईकोर्ट ने माल्या को फटकार लगाते हुए कहा था कि वह जानबूझकर अदालत की कार्यवाही से बचते हुए समानता के आधार पर राहत की मांग नहीं कर सकते। शीर्ष अदालत ने उन्हें यह स्पष्ट करने का अंतिम मौका दिया था ।

एंथ्रोपिक-ओपनएआई के रिसर्चर ने दिया इस्तीफा, जनता को किया आगाह

वाशिंगटन, एजेंसी। एंथ्रोपिक और ओपनएआई में तीन साल तक मुख्य एआई मॉडल बनाने वाले 27 वर्षीय रिसर्चर जैकब कॉक्सन ने इस्तीफा दे दिया है। 8 सितंबर को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर की गई एक पोस्ट में उन्होंने चेतावनी दी कि दोनों कंपनियां सुपरइंटेलिजेंस बनाने की अंधी दौड़ में 'हमारे जीवन के साथ जुआ खेल रही' हैं। कॉक्सन ने चेतावनी दी है कि एआई के विकास में शामिल कई अंदरूनी सूत्र मानते हैं कि इस दशक के अंत तक यह मानवता के लिए घातक साबित हो सकता है। उन्होंने इस स्थिति की तुलना मैनहट्टन प्रोजेक्ट से करते हुए कहा कि सैन फ्रांसिस्को के कुछ इंजीनियर्स के हाथों में दुनिया की सबसे खतरनाक तकनीक का भविष्य तय हो रहा है। इस इस्तीफे ने पूरी दुनिया में एआई सुरक्षा और टेक

कंपनियों की पारदर्शिता पर एक नई बहस छेड़ दी है। कॉक्सन के मुताबिक, भले ही एंथ्रोपिक की सेफ्टी टीमें ईमानदारी से काम करना चाहती हैं, लेकिन बाजार की कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण सुरक्षा से जुड़े समझौतों से बचना नामुमकिन हो गया है। दोनों कंपनियों को लगता है कि अगर वे नहीं रुकीं, तो उनका प्रतिद्वंद्वी आगे निकल जाएगा। कॉक्सन ने चेतावनी दी कि एआई जिस रफ्तार से आगे बढ़ रहा है, उससे अगले साल के अंत तक ही ऐसी स्थितियां बन सकती हैं जहां एआई सिस्टम इंसानों के नियंत्रण से पूरी तरह बाहर हो जाएं।

कॉक्सन ने दोनों कंपनियों पर आरोप लगाया कि वे एआई की बेकाबू रफ्तार से जुड़े अपने असली डर को आम जनता से छुपा रही हैं। कॉक्सन का कहना है कि एआई कंपनियां खुद को बेहतर बनाने वाली सुपरइंटेलिजेंस तक जल्दी पहुंचना चाहती हैं। उन्होंने चिंता जताई कि अगर कोई कंपनी पीछे रह गई, तो दूसरी कंपनी पहले ऐसी तकनीक विकसित कर सकती है। इसी डर के कारण कंपनियां जोखिम के बावजूद्द आगे बढ़ रही हैं।

350 से अधिक टेक दिग्गज बता चुके हैं महामारी और परमाणु युद्ध जैसा खतरा : ओपनएआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन, गूगल डीपमाइंड के सीईओ डेमिस हसाबिस और एंथ्रोपिक लीईओ डारियो अमोदेई सहित दुनिया के 350 से अधिक शीर्ष टेक लीडर्स ने कहा है एआई के जोखिम को कम करना एक वैश्विक प्राथमिकता होनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे महामारी और परमाणु युद्ध जैसी अन्य सामाजिक स्तर की आपदाओं से निपटने को प्राथमिकता दी जाती है। माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक बिल गेट्स का कहना है कि एआई तकनीक का इस्तेमाल अपराधी या आतंकवादी खतरनाक वायरस या कंप्यूटर वायरस बनाने के लिए कर सकते हैं, जिससे पूरी दुनिया में भारी उथल-पुथल मच सकती है।

कॉक्सन ने कहा कि तकनीक की दौड़ को रोकने के लिए एआई मॉडल की क्षमताएं बढ़ाने पर अस्थायी रोक जैसे कड़े कदमों पर विचार किया जाना चाहिए।

धमाकों से दहले सऊदी और ईरान: पश्चिम एशिया में फिर बढ़ रहा तनाव, डोनाल्ड ट्रंप ने बताया कब खत्म होगा युद्ध

तेहरान, एजेंसी। ईरान के सरकारी प्रसारक 'इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ब्रॉडकास्टिंग' के अनुसार, सिरिक और मिनाब काउंटी के तटीय इलाकों में बुधवार को लगातार कई धमाकों की आवाजें सुनाई दीं। इन घटनाओं को लेकर होर्मोजगान प्रशासन ने बताया कि केशम में सुनी गई आवाजों का स्रोत समुद्र में पाया गया है। वहीं, आईआरआईबी ने अरब मीडिया के हवाले से बताया कि सऊदी अरब के किंग फहद एयर बेस पर भी कई धमाकों की आवाजें सुनी गईं। इसके अलावा, ईरानी समाचार एजेंसी आईआरएनए ने खबर दी कि सऊदी शहर ताइफ में भी धमाकों की आवाजें सुनी गईं। सऊदी मीडिया के हवाले से आईआरएनए ने कहा कि इलाके में कम से कम दो जोरदार धमाकों की आवाज सुनी गई है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को दावा किया कि ईरान के साथ चल रहा युद्ध आगामी अमेरिकी मध्यावधि चुनावों के बाद 'तुरंत' खत्म हो जाएगा। ट्रंप ने तेहरान पर आरोप लगाया कि वह इस उम्मीद में संघर्ष को खींच रहा है कि वाशिंगटन में सत्ता परिवर्तन हो और उसे परमाणु हथियार हासिल करने का मौका मिल सके।

कब खत्म होगा युद्ध : टेक्सास के डलास में रिपब्लिकन मध्यावधि सम्मेलन के लिए रवाना होने से पहले पत्रकारों से बात करते हुए ट्रंप ने कहा कि मुझे लगता है कि चुनाव के तुरंत बाद युद्ध खत्म हो जाएगा। ईरान के पास अब ज्यादा विकल्प नहीं बचे हैं। क्योंकि वे अब और नहीं टिक सकते। वे चुनाव को प्रभावित करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, ताकि वहां लोगों का एक अच्छा, कमजोर समूह सत्ता में आ सके और हम उन्हें अकेला छोड़ दें और उन्हें अपना परमाणु हथियार हासिल करने दें। वे बस परमाणु हथियार चाहते हैं और अगर उनके पास परमाणु हथियार आ गया, तो पूरी दुनिया बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगी।

बातचीत को लेकर ट्रंप ने दिया संकेत : जब ट्रंप से पूछा गया कि क्या उन्हें उम्मीद है कि ईरान के साथ राजनयिक बातचीत फिर से शुरू होगी या सैन्य अभियान दोबारा शुरू किया जाएगा, तो उन्होंने संकेत दिया कि वाशिंगटन फिलहाल बातचीत को लेकर जल्दबाज़ी में नहीं है। हालिया सैन्य अभियानों ने ईरानी सरकार को बुरी तरह कमजोर कर दिया है। किसी भी अंतिम कूटनीतिक समाधान का दायरा पारंपरिक परमाणु समझौतों तक सीमित नहीं होगा।

हूतियों को ईरान का प्रॉक्सी बताने पर बघाई का पलटवार : दूसरी ओर, ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने गुरुवार को अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो के उन आरोपों को खारिज कर दिया, जिनमें कहा गया था कि यमन के हूती विद्रोही तेहरान के प्रॉक्सी यानी प्रतिनिधि के तौर पर काम करते हैं। बघाई ने कहा कि हूती समूह स्वतंत्र रूप से काम करता है और किसी से आदेश नहीं लेता। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने अमेरिका पर अपनी सैन्य मौजूदगी और वर्चस्ववादी नीतियों के जरिए क्षेत्र में अस्थिरता फैलाने का आरोप लगाया। उन्होंने जोर देकर कहा कि यमन में स्थायी शांति स्थापित करने के लिए बाहरी दखलंदाजी को खत्म करना जरूरी है। बघाई ने कहा,'मार्को रुबियो के झूठ तथ्यों की जगह नहीं ले सकते। अंसारुल्लाह यमन का एक स्वतंत्र गुट है, जो अपने फैसले खुद लेता है।

'पुतिन समझौते के लिए तैयार': ट्रंप ने बता दिया कौन डाल रहा अड़ंगा; क्या खत्म होने वाला है रूस-यूक्रेन युद्ध

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ फोन पर हुई बातचीत को 'बहुत अच्छी' बताया है। ट्रंप का दावा है कि पुतिन यूक्रेन युद्ध को खत्म करने के लिए समझौता करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अगर यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की भी डील के लिए तैयार हैं तो यह अच्छी बात होगी। ट्रंप ने युद्ध की बातचीत में अड़चन के तौर पर पुतिन और जेलेंस्की के बीच दुश्मनी को बताया है।

ट्रंप ने अड़चन के लिए किसे बताया जिम्मेदार : अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, 'अड़चन दो लोग हैं, जो एक-दूसरे से नफरत करते हैं।' उनका इशारा पुतिन और जेलेंस्की की ओर था। डोनाल्ड ट्रंप का यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिका रूस और यूक्रेन के बीच बातचीत फिर शुरू कराने की कोशिश कर रहा है। हालांकि, ताजा रिपोर्टों के मुताबिक अभी दोनों पक्षों के बीच किसी अंतिम समझौते पर सहमति नहीं बनी है।

अमेरिकी दूत मॉस्को और कीव पहुंचे, फिर भी क्यों नहीं बनी बात : हाल ही में ट्रंप के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ और उनके दामाद जेरेड कुशनर ने पहले मॉस्को में पुतिन से मुलाकात की और उसके बाद कीव जाकर जेलेंस्की से बातचीत की। मकसद शांति वार्ता को दोबारा पटरी पर लाना था। दोनों मुलाकातों को सकारात्मक और रचनात्मक बताया गया, लेकिन कोई ठोस सफलता सामने नहीं आई।

सबसे बड़ी अड़चन क्या : रूस और यूक्रेन के बीच सबसे बड़े विवादों में से एक यूक्रेन के उन इलाकों का भविष्य है, जिन पर रूस का कब्जा है। रूस डोनेट्स्क के बचे हुए हिस्से समेत क्षेत्रीय मांगों पर अड़ा हुआ है, जबकि जेलेंस्की मौजूदा यूक्रेनी नियंत्रण वाले इलाकों को रूस को सौंपने के खिलाफ हैं। यही वजह है कि बातचीत फिर शुरू करने की कोशिशों के बावजूद समझौते का रास्ता आसान नहीं दिख रहा। कूटनीतिक कोशिशों के साथ जमीन पर लड़ाई और हवाई हमले भी जारी हैं। हालिया रूसी

हमलों में कीव समेत यूक्रेन के कई इलाकों को निशाना बनाया गया है। दूसरी ओर यूक्रेन भी रूस के भीतर लंबी दूरी के ड्रोन हमले कर रहा है। यानी बातचीत की मेज पर शांति की कोशिश चल रही है, लेकिन मोर्चे पर युद्ध अभी थमा नहीं है।

क्या जल्द युद्ध खत्म होने की उम्मीद है : अभी इसे लेकर कोई पक्की समयसीमा नहीं है। अमेरिका बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है और रूस ने भी वार्ता फिर शुरू करने की इच्छा जताई है, लेकिन दोनों पक्षों की मांगों में बड़ा अंतर बना हुआ है। इसलिए ट्रंप का 'डील' वाला दावा महत्वपूर्ण जरूर है, लेकिन इसे अभी शांति समझौता हो जाने के तौर पर नहीं देखा जा सकता।

ईरानी टैंकरों पर हमलों को लेकर क्या बोले ट्रंप : दूसरी ओर, ईरान से जुड़े टैंकरों पर हमलों को लेकर भी ट्रंप ने बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने ईरान के नौ जहाजों को निशाना बनाया है। ट्रंप ने साफ कहा कि ये हमले अमेरिका की ओर से किए गए हैं और आने वाले समय में ऐसे और हमले देखने को मिल सकते हैं। उन्होंने कहा कि परमाणु मुद्दा बातचीत का हिस्सा जरूर होगा, लेकिन इसके अलावा भी कई दूसरे मुद्दे मेज पर होंगे। ट्रंप के मुताबिक, इनमें से कुछ बातें ऐसी हैं जो तीन महीने पहले बातचीत की मेज पर नहीं थीं। ट्रंप ने कहा, 'मैं सिर्फ परमाणु समझौते से कहीं ज्यादा कर रहा हूं। परमाणु मुद्दे से बहुत कुछ ज्यादा है। परमाणु समझौता होगा, यह 99.9 है, लेकिन मेज पर कई दूसरी चीजें भी होंगी, जो तीन महीने पहले मेज पर नहीं थीं।'

सुप्रीम लीडर के बारे में ट्रंप ने क्या कहा : डोनाल्ड ट्रंप ने आगे कहा कि अगर मैंने जेसीपीओए (जॉइंट कॉम्प्रिहेंसिव प्लान ऑफ एक्शन) को रद्द नहीं किया होता और अगर हमने अपने शानदार बी2 बॉम्बर्स से ईरान पर हमला नहीं किया होता, तो आज उनके पास परमाणु हथियार होता और मैं सुप्रीम लीडर से ऐसे बात कर रहा होता - 'मिस्टर सुप्रीम लीडर सर, आप कैसे हैं' अब मुझे ऐसा नहीं करना है। हम ईरान को परमाणु हथियार हासिल नहीं करने दे सकते।

चुनाव और युद्ध को लेकर ट्रंप का क्या दावा : डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि मुझे लगता है कि चुनाव के तुरंत बाद युद्ध खत्म हो जाएगा। वे चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश में बेताब हैं, ताकि वहां अच्छे और कमजोर लोगों का समूह आ जाए और उन्हें अकेला छोड़ दे और उन्हें अपना परमाणु हथियार रखने दिया जाए।

गुलाब की खेती

भूमिका

गुलाब अपनी उपयोगिताओं के कारण सभी पुष्पों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। आमतौर पर गुलाब का पौधा ऊंचाई में 4-6फुट का होता है। तने में असमान कांटे लगे होते हैं। गुलाब की 5 पत्तियां मिली हुई होती है। बहुत मात्रा में मिलने वाला गुलाब का फूल गुलाबी रंग का होता है। गुलाब का फल अंडाकार होता है। इसका तना कांटेदार, पत्तियां बारी-बारी से घेरे में होती है। पत्तियों के किनारे दांतेदार होती है। फल मांसल बेरी की तरह होता है जिसे 'रोज हिप' कहते हैं। गुलाब का पुष्पवृन्त कोरिम्बोस, पेनीकुलेट या सोलिटरी होता है।

गुलाब एक भारतीय पुष्प है। पूरे भारत में गुलाब के पौधे पाए जाते हैं। गुलाब का वैज्ञानिक नाम रोजा हाइब्रिडा है। देशी गुलाब लाल रंग का होता है। परन्तु कलम करके कई रंगो के गुलाब उगाए जाते हैं। गुलाब एक ऐसा फूल है, जिसके बारे में सब जानते हैं। गुलाब का फूल दिखने में जितना अधिक सुन्दर होता है। उससे कहीं ज़्यादा उसमें औषधीय गुण होते हैं। यह सबसे पुराना सुगन्धित पुष्प है, जो मनुष्य के द्वारा उगाया जाता था। इसके विभिन्न प्रकार के सुन्दर फूल जो कि आर्कषक, आकृति, विभिन्न आकार, मन को लुभाने वाले रंगों और अपने विभिन्न उपयोगिताओं के कारण एक महत्त्वपूर्ण पुष्प माना जाता है।

गुलाब की उपज भूमि की उर्वरा शक्ति फसल की देखरेख एवं प्रजातियों पर निर्भर करती हैढ्ढ फूलों का गुण हैं खिलना, खिल कर महकना, सुगंध बिखेरना, सौंदर्य देना और अपने देखने वाले को शांति प्रदान करना। फूलों की इस खूबसूरत दुनिया में गुलाब का एक ख़ास स्थान है क्योंकि इसे सौंदर्य, सुगंध और खुशहाली का प्रतीक माना गया है। तभी तो इसे 'पुष्प सम्राट' की संज्ञा दी गयी है और 'गुले-आप', यानी फूलों की रौनक भी कहा गया है। इस की भीनीभीनी मनमोहक सुगंध, सुन्दरता, रंगों की विविध किस्मों के कारण हर प्रकृति प्रेमी इसे अपनाना चाहता है।

भारत में गुलाब हर जगह उगाया जाता है। बागबगीचों, खेतों, पार्कों, सरकारी व निजी इमारतों के अहातों में, यहाँ तक कि घरों की ग्रह-वाटिकाओं की क्यारियों और गमलों में भी गुलाब उगा कर उस का आनंद लिया जाता है। गुलाब पूरे उत्तर भारत में, खासकर राजस्थान में तथा बिहार और मध्य प्रदेश में जनवरी से अप्रैल तक ख़ूब खिलता है। दक्षिण भारत में खासतौर पर बंगलौर में और महाराष्ट्र और गुजरात में भी गुलाब की भरपूर खेती होती है।

गुलाब को घर पर गमले में खिड़की की मंजूषा में, रसोई बगीचे की क्यारी में, आँगन में उगाने के लिए पर्याप्त धूप का होना एक आवश्यक शर्त है। गुलाब को दिन में कम से कम छः से आठ घंटे की खुली धूप होना आवश्यक है। गुलाब के पौधों के लिए पर्याप्त जीवांशयुक्त मिट्टी अच्छी होती है। बहुत चिकनी मिट्टी इसके अनुकूल नहीं होती है। मिट्टी का जल निकास और वायुसंचार सुचारु होना चाहिए। भूमि में हल्की नमी बनी रहना चाहिए। गुलाब को विश्वभर में पसंद किया जाता है। इस पर व्यापक अनुसंधान एवं विकास कार्य किए गए हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुलाब प्रेमियों के संगठन हैं, जो नई किस्मों के विकास, परिचिन्हन, मानकीकरण आदि करते हैं। इसके अनुसार पौधों की बनावट, ऊँचाई, फूलों के आकार आदि के आधार पर इन्हें निम्न वर्गों में बाँटा गया है।

गुलाब का व्यवसाय

गुलाब की खेती व्यावसायिक स्तर पर करके काफी लाभ कमाया जा सकता है। गुलाब की खेती बहुत पहले से पूरी दुनिया में की जाती हैढ्ढ इसकी खेती पूरे भारतवर्ष में व्यवसायिक रूप से की जाती हैढ्ढ गुलाब के फूल डाली सहित या कट फ्लावर तथा पंखुड़ी फ्लावर दोनों तरह के बाजार में व्यापारिक रूप से पाये जाते हैढ गलाब की खेती देश व विदेश निर्यात करने के लिए दोनों ही रूप में बहुत महत्वपूर्ण हैढ्ढ गुलाब को कट फ्लावर, गुलाब जल, गुलाब तेल, गुलकंद आदि के लिए उगाया जाता हैढ्ढ गुलाब की खेती मुख्यतः कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्रा, बिहार, पश्चिम बंगाल ,गुजरात, हरियाणा, पंजाब, जम्मू एवं कश्मीर, मध्य प्रदेश, आंध्रा प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में अधिक की जाती हैढ्ढ

फूल के हाट में गुलाब के गजरे खूब बिकते हैं। गुलाब की पंखुडियों और शक्कर से गुलकन्द बनाया जाता है। गुलाब जल और गुलाब इत्र के कुटीर उद्योग चलते है। उत्तर प्रदेश में कन्नौज, जौनपुर आदि में गुलाब के उत्पाद की उद्योगशाला चलती है। दक्षिण भारत में भी गुलाब के उत्पाद के उद्योग चलते हैं। दक्षिण भारत में गुलाब फूलों का खूब व्यापार होता है। मन्दिरों, मण्डपों, समारोहों, पूजा-स्थलों आदि स्थानों में गुलाब फूलों की भारी खपत होती है। यह अर्थिक लाभ का साधन है। वहाँ हजारों ग्रामीण युवा फूलों को अपनी आय का माध्यम बना लेते हैं।

गुलाब की किस्में

भारत में उगाई जाने वाली गुलाब की परम्परागत किस्में हैं, जो देश के अलगअलग इलाकों में उगाई जाते हैं, विदेशों से भी

अलगअलग किस्में मांगा कर उन का 'संकरण' (2 किस्मों के बीच क्रास) कर के अनेक नई व उन्नत किस्में तैयार की गयी हैं, जो अब अपने देश में बहुत लोकप्रिय हैं।

गुलाब की विदेशी किस्में जर्मनी, जापान, फ्रास, इंग्लैण्ड, अमेरिका, आयरलैंड, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया से मंगाई गयी हैं। भारतीय गुलाब विशेषज्ञों ने देशी किस्मों में भी नयी विकसित 'संकर' (हाईब्रिड) किस्में जोड़ कर गुलाब की किस्मों की संख्या में वृद्धि की है। इस दिशा में दिल्ली स्थित भारती कृषि अनुसंधान संस्थान का अनुसंधान कार्य ख़ास उल्लेखनीय है। दक्षिण भारत में भारतीय बागबानी अनुसंधान संसथान, बंगलौर ने भी किस्मों के विकास और वृद्धि में भरपूर कार्य किया है। मात्र शौक और सजावट के लिये गुलाब का पौधा जब गमले में उगाया जाए तो किस्मों का चुनाव भी उसी के अनुसार किया जाना चाहिए। व्यावसायिक स्तर पर गुलाब की खेती करनी हो तो वैसी ही किस्मों का चयन करें। इस बारे में प्रायः सभी बड़ी नर्सरियों में पूरी जानकारी मिल सकती है। दिल्ली में हों तो भारतीय कृषि अनुसंधान पूसा के पुष्प विज्ञान विभाग से उचित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

वैसे तो विश्व भर में गुलाब की किस्मों की संख्या लगभग 20 हजार से अधिक है, जिन्हें विशेषज्ञों ने विभिन्न वर्गों में बांटा है लेकिन तक्तीकी तौर पर गुलाब के 5 मुख्य वर्ग हैं, जिन का फूलों के रंग, आकार, सुगंध और प्रयोग के अनुसार विभाजन किया गया है, जो इस प्रकार है- हाईब्रिड टीज, फ्लोरीबंडा, पोलिएन्था वर्ग, लता वर्ग और मिनिएचर वर्ग।

हाईब्रिड टीज वर्ग

यह बड़े आकार के गुलाबों का एक महत्वपूर्ण वर्ग है, जिस में टहनी के ऊपर या सिरे पर एक ही फूल खिलता है, इस वर्ग की अधिकतर किस्में यूरोप और छीन के 'टी' गुलाबों के 'संकर' (क्रास) से तैयार की गयी है, इस वर्ग की भारतीय किस्में हैं = डा.होमी भाभा, चितवन, भीम, चित्रलेखा, चंद्रबंदीकली, गुलजार, मिलिंद, मृणालिनी, रक्तगंधा, सोमा, सुरभी, नूरजहाँ, मदहोश, डा. बैंजमन पाल आदि।

हाइब्रिड टी (एचटी),इस वर्ग के पौधे बड़े, ऊँचे व तेजी से बढ़ने वाले होते हैं। इस वर्ग की प्रमुख किस्में अर्जुन, जवाहर, रजनी, रक्तगंधा, सिद्धार्थ, सुकन्या आदि हैं। इनके पुष्प शाखा के सिरे पर बड़े आकर्षक लगते हैं। एक शाखा के सिरे पर एक ही फूल आता है।

फ्लोरीबंडा वर्ग

यह हाईब्रिड टीज और पोलिएन्था गुलाबों के संकर (मिलन) से विकसित किये गए गुलाबों का वर्ग है। इस के फूल उपेक्षाकृत छोटे किन्तु गुच्छों में खिलतें हैं और आकार व वजन में बढ़िया होते हैं। इस वर्ग के फूल गृहवाटिका की क्यारियों और गमलों में ज्यादा देखने को मिलते हैं। इस किस्म की विशेषता है कि इन के पौधे कम जगह में ही उगा कर पर्याप्त फ्लोरीबंडा, इसके पौधे मध्यम लंबाई वाले होते हैं, इनमें फूल भी मध्यम आकार के और कई फूल एक साथ एक ही शाखा पर लगते हैं। इनके फूलों में पंखुड़ियों की संख्या हाइब्रिड टी के फूलों की अपेक्षा कम होती हैं। इस वर्ग की प्रमुख किस्में बंजारन, आम्रपाली, ज्वाला, रांगोली, सुषमा आदि हैं।

ग्रेन्डीफ्लोरा

यह उपरोक्त दोनों किस्मों के संयोग से तैयार किया गया है। गुलदानों में इस वर्ग के फूलों को अधिक पसंद किया जाता है। बड़े स्तर पर खेती के लिए इस वर्ग का अधिक उपयोग किया जाता है। गोल्ड स्पॉट, मांटेजुआ, क्वीन एलिजाबेथ इस वर्ग की प्रचलित किस्में हैं।

पॉलिएन्था

इस वर्ग के पौधों को घरेलू बगीचों व गमलों में लगाने के लिए पसंद किया जाता है। क्योंकि इनमें मध्यम आकार के फूल अधिक संख्या में साल में अधिक समय तक आते रहते हैं। इस वर्ग की प्रमुख किस्में स्वाति, इको, अंजनी आदि हैं।

मिनिएचर वर्ग

इस के पौधे, पट्टियां और फूल सभी छोटे होते हैं। पौधे कलामों द्वार उगे जाते हैं। यह गमलों, पतियों आदि में उगाने की उपयुक्त किस्म है। गृहवाटिका की क्यारियों के चारों ओर बार्डर लगाने के लिये भी उपयुक्त है। गुलाब के फूल खिलने का मौसम (अक्टूबर से मार्च) में इस किस्म के गुलाब खूब खिलते हैं। विभिन्न रंगों लगते हैं। इन्हें बड़े शहरों में बंगलों, फ्लैटों आदि में छोटे गमलों में लगाया जाना उपयुक्त रहता है, परंतु धूप की आवश्यकता अन्य गुलाबों के समान छः से आठ घंटे आवश्यक है। इस वर्ग की प्रमुख किस्में ड्वार्फ किंग, बेबी डार्लिंग, क्रीकी, रोज मेरिन, सिल्वर टिप्स आदि हैं।

लता वर्ग (क्लैंग्बिंग एंड रैंबलिंग रोज)

इस वर्ग के गुलाब के पौधे लताओं के रोप में बढ़ते हैं और पैराबोला पर या दीवार का सहारा पा कर बढ़ते हैं। ये साल में केवल एक बार खिलते हैं।

ये गुलाब की बेल (लता) वाली किस्में हैं। इन्हें मेहराब या अन्य किसी सहारे के साथ चढ़ाया जा सकता है। इनमें फूल एक से तीन (क्लाइंबर) व गुच्छों (रेम्बलर) में लगते हैं। इस की मुख्य किस्में है सदाबहार, समर स्नो, डा.होमी भाभा, मार्शल नील, दिल्ली वाईट पर्ल आदि।

क्लाइंबर वर्ग की प्रचलित किस्में गोल्डन शावर, कॉकटेल, रायल गोल्ड और रेम्बलर वर्ग की एलवटाइन, एक्सेलसा, डोरोथी पार्किंस आदि हैं।

गुलाब में जितने रंगों के फूल देखने को मिलते हैं उतने शायद किसी दूसरे फूल में नहीं। यदि सफ़ेद गुलाब हैं तो पीले, लाल, नारंगीलाल, रक्तलाल, गुलाबी लेवेंडर रंग के दोरंगे, तींरगे और यहाँ तक कि अब तो नीले और काले रंग के गुलाब भी पाए जाते है।

गुलाब की खेती के लिए जलवायु और भूमि

गुलाब की खेती उत्तर एवं दक्षिण भारत के मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में जाड़े के दिनों में की जाती हैढ्ढ दिन का तापमान 25 से 30 डिग्री सेंटीग्रेट तथा रात का तापमान 12 से 14 डिग्री सेंटीग्रेट उत्तम माना जाता हैढ्ढ गुलाब की खेती हेतु दोमट मिट्टी तथा अधिक कार्बनिक पदार्थ वाली होनी चाहिएढ्ढ जिसका पी.एच. मान 5.3 से 6.5 तक उपयुक्त माना जाता है।

गुलाब की उन्नतशील प्रजातियां

गुलाब की लगभग 6 प्रकार की प्रजातियां पाई जाती है प्रथम संकर प्रजातियां जिसमे कि क्रिमसन ग्लोरी, मिस्टर लिंकन, लवजान, अफकैनेडी, जवाहर, प्रसिडेंट, राधाकृषणन, फर्स्ट लव , पूजा, सोनिया, गंगा, टाटा सैंटानरी, आर्किड, सुपर स्टार, अमेरिकन हेरिटेज आदि हैढ्ढ दूसरे प्रकार कि पॉलीएन्था इसमे अंजनी, रश्मी, नर्तकी, प्रीत एवं स्वाती आदिढ्ढ तीसरे प्रकार कि फ् लोरीबण्डा जैसी कि बंजारन, देहली प्रिंसेज, डिम्पल, चन्द्रमा, सदाबहार, सोनोरा, नीलाम्बरी, करिश्मा सूर्यकिरण आदिढ्ढ चौथे प्रकार कि गैंडीफलोरा इसमे क्वींस, मांटेजुमा आदिढ्ढ पांचवे प्रकार कि मिनीपेचर ब्यूटी क्रिकेट, रेड फ्लस, पुसकला, बेबीगोल्ड स्टार, सिल्वर टिप्स आदि और अंत में छठवे प्रकार कि लता गुलाब इसमे काक्लेट, ब्लैक बॉय, लैंड मार्क, पिंक मेराडोन, मेरीकलनील आदि पाई जाती है।

गुलाब के खेतों की तैयारी

सुंदरता की दृष्टि से औपचारिक लेआउट करके खेत को क्यारियों में बाँट लेते है क्यारियों की लम्बाई चौड़ाई 5 मीटर लम्बी 2 मीटर चौड़ी रखते हैढ्ढ दो क्यारियों के बीच में आधा मीटर स्थान छोड़ना चाहिएढ्ढ क्यारियों को अप्रैल मई में एक मीटर की गुड़ाई एक मीटर की गहराई तक खोदे और 15 से 20 दिन तक खुला छोड़ देना चाहिएढ्ढ क्यारियों में 30 सेंटीमीटर तक सूखी पत्तियो को डालकर खोदी गयी मिट्टी से क्यारियों को बंद कर देना चाहिए साथ ही गोबर की सड़ी खाद एक महीने पहले क्यारी में डालना चाहिए इसके बाद क्यारियों को पानी से भर देना चाहिए साथ ही दीमक के बचाव के लिए फ़ालीडाल पाउडर या कार्बोफ्यूरान 3 जी. का प्रयोग करेढ्ढ लगभग 10 से 15 दिन बाद ओठ आने पर इन्ही क्यारियों में कतार बनाते हुए पौधे व् लाइन से लाइन की दूरी 30 गुने 60 सेंटीमीटर रखी जाती हैढ्ढ इस दूरी पर पौधे लगाने पर फूलों की डंडी लम्बी व् कटाई करने में आसानी रहती है।

गुलाब की खेती के लिए आवश्यक सावधानियां

बरसात के मौसम में गमलों और क्यारियों में बहुत देर तक पानी भरा न रहने दें।

हर साल, पौधों की छंटाई कर, गमले के ऊपर की 2-3 इंच मिट्टी निकाल कर उस में उतनी ही गोबर की सड़ी खाद भर दें।

हर 2-3 साल के बाद सम्पूर्ण पौधे को मिट्टी सहित नए गमले में ट्रांसफर कर दें। चाहें तो गमले की मिट्टी बदल कर ताजा मिश्रण भरें।

यह प्रक्रिया सितम्बर-अक्टूबर में करें।

गुलाब की खेती में खाद और उर्वरकों की आवश्यकता

उत्तम कोटि के फूलों की पैदावार लेने के हेतु प्रूनिंग के बाद प्रति पौधा 10 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद मिट्टी में मिलाकर सिंचाई करनी चाहिएढ्ढ खाद देने के एक सप्ताह बाद जब नई कोपल फूटने लगे तो 200 ग्राम नीम की खली 100 ग्राम हड्डी का चूरा तथा रासायनिक खाद का मिश्रण 50 ग्राम प्रति पौधा देना चाहिएढ्ढ मिश्रण का अनुपात एक अनुपात दो अनुपात एक मतलब यूरिया, सुपर फास्फेट, पोटाश का होना चाहिए।

गुलाब की देखभाल

गुलाब के लिए सिंचाई का प्रबंधन उत्तम होना चाहिएढ्ढ आवश्यकतानुसार गर्मी में 5 से 7 दिनों के बाद तथा सर्दी में 10 से 12 दिनों के बाद सिंचाई करते रहना चाहिए। उत्तर प्रदेश के मैदानी भागो में कटाई-छटाई हेतु अक्टूबर का दूसरा सप्ताह सर्वोत्तम होता है लेकिन उस समय वर्षा नहीं होनी चाहिएढ्ढ पौधे में तीन से पांच मुख्य टहनियों को 30 से 40 सेंटीमीटर रखकर कटाई की जाती हैढ्ढ यह ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ आँख हो वहाँ से 5 सेंटीमीटर ऊपर से कटाई करनी चाहिएढ्ढ कटे हुए भाग को कवकनाशी दवाओ से जैसे कि कापर आक्सीक्लोराइड, कार्बेन्डाजिम, ब्रोडोमिश्रण या चौबटिया पेस्ट का लेप लगना आवश्यक होता हैढ्ढ

गमलों के लिये मिट्टी का मिश्रण कुछ इस तरह से रखें। 2 भाग खेत की मिटटी, एक भाग खूब सड़ी गोबर की खाद, एक भाग में सूखी हरी पत्ते की खाद (लीफ मॉल्ड) और लकड़ी का बुरादा मिला लें। सम्भव हो तो कुछ मात्रा में हड्डी का चुरा भी मिला लें। इस से पौधों और जड़ों का अच्छा विकास होता है।

याद रहे कि गमलों में पौधों का रखरखाव वैसा ही हो, जैसी कि क्यारियों में होता है, उन की उचित निराईगुडाई में होता है। मसलन, पौधों को पूरी खुराक मिले, उन की उचित निराईगुडाई और सिंचाई हो, कीट व्याधियों से बचाव हो, गमलों के पौधों को मौसम के अनुसार समय-समय पर पानी दिया जाए और उन की कटाईछंटाई भी की जाए। सप्ताह में एक बार गमलों की दिशा भी अवश्य बदलें और उन के तले से पानी निकलने का चित्र भी उचित रूप से खुला रखें। गुलाब में माहू, दीमक एवं सल्क कीट लगते हैढ्ढ माहू तथा सल्क कीट के दिखाई देने पर तुरंत डाई मिथोएट 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में या मोनोक्रोटोफास 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 -3 छिड़काव करना चाहिएढ्ढ दीमक के नियंत्रण हेतु सिंचाई करनी चाहिए तथा फोरेट 10 जी. 3 से 4 ग्राम या फ़ालीडाल 2ज्ञ धुल 10 से 15 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके भूमि में अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

गुलाब के फूलों की कटाई

सफ़ेद, लाल, गुलाबी रंग के फूलों की अध् खुली पंखुड़ियों में जब ऊपर की पंखुड़ी नीचे की ओर मुड़ना शुरू हो जायें तब फूल काटना चाहिएढ्ढ फूलों को काटते समय एक या दो पत्तियां टहनी पर छोड़ देना चाहिए जिससे पौधों की वहाँ से बढ़वार होने में कोइ परेशानी न हो सकेढ्ढ फूलों की कटाई करते समय किसी बर्तन में पानी साथ में रखना चाहिए जिससे फूलों को काटकर पानी तुरंत रखा जा सकेढ्ढ बर्तन में पानी कम से कम 10 सेंटीमीटर गहरा अवश्य होना चाहिए जिससे फूलों की डंडी पानी में डूबी रहे पानी में प्रिजर्वेटिव भी मिलाते हैढ्ढ फूलों को कम से कम 3 घंटे पानी में रखने के बाद ग्रेडिंग के लिए निकालना चाहिएढ्ढ यदि ग्रेडिंग देर से करनी हो तो फूलों को 1 से 3 डिग्रीसेंटीग्रेट तापक्रम पर कोल्ड स्टोरेज रखना चाहिए जिससे कि फूलों की गुणवत्ता अच्छी रह सके

गुलाब के पौधे गृहवाटिका में मिटटी के गमलों में आसानी से उगे जा सकते हैं, जो कम से कम 30 सेंटीमीटर घेरे के और उतने ही गहरे हों। मिनिएचर गुलाब के लिये 20 से 25 सेंटीमीटर आकार के गमले पर्याप्त हैं। गमलों को स्वच्छ वातावरण में रखा जाए। जैसे ही नयी कोपलें और शाखाएं अंकुरित होने लगें, उन्हें ही सूरज की रोशनी में रखें। दिन भर इन्हें 4-5 घंटे धूप अवश्य मिलनी चाहिए। हाँ, गरमी की कड़कती धूप में 1-2 घंटे ही पर्याप्त हैं।

जब जहाँ भी चारों ओर गुलाब खिलता है तो सब ओर इस की सुरभि व्याप्त हो जाती है। फरवरी-मार्च में गुलाब अपने पूर्ण यौवन और बहार पर होता है। आओ, इसे अपनी गृहवाटिका में उगायें और इस के सौंदर्य और महक का आनंद लें।

गुलाब की खेती करने के लिए पौध तैयार करना

आमतौर पर जुलाई-अगस्त में मानसून आते ही गुलाब लगाया जाता है। सितम्बर-अक्टूबर में तो यह भरपूर उगाया जाता है। गुलाब लगाने की सम्पूर्ण विधि और प्रक्रिया अपनाई जाए तो यह फूल मार्च तक अपने सौंदर्य, सुगंध और रंगों से न केवल हमें सम्मोहित करता है बल्कि लाभ भी देता है। जंगली गुलाब के ऊपर टी बडिंग द्वारा इसकी पौध तैयार होती हैढ्ढ जंगली गुलाब की कलम जून-जुलाई में क्यारियों में लगभग 15 सेंटीमीटर की दूरी पर लगा दी जाती हैढ्ढ नवम्बर से दिसंबर तक इन कलम में टहनियां निकल आती है इन पर से कांटे चाकू से अलग कर दिए जाते हैढ्ढ जनवरी में अच्छे किस्म के गुलाब से टहनी लेकर टी आकार कालिका निकालकर कर जंगली गुलाब की ऊपर टी में लगाकर पालीथीन से कसकर बाँध देते हैढ्ढ ज्यो-ज्यो तापमान बढता है तभी इनमे टहनी निकल आती हैढ्ढ जुलाई अगस्त में रोपाई के लिए पौध तैयार हो जाती है। पौधशाला से सावधानीपूर्वक पौध खोदकर सितम्बर-अक्टूबर तक उत्तर भारत में पौध की रोपाई करनी चाहिएढ्ढ रोपाई करते समय ध्यान दे कि पिंडी से घास फूस हटाकर भूमि की सतह से 15 सेंटीमीटर की ऊंचाई पर पौधों की रोपाई करनी चाहिएढ्ढ पौध लगाने के बाद तुरंत सिंचाई कर देना चाहिए।

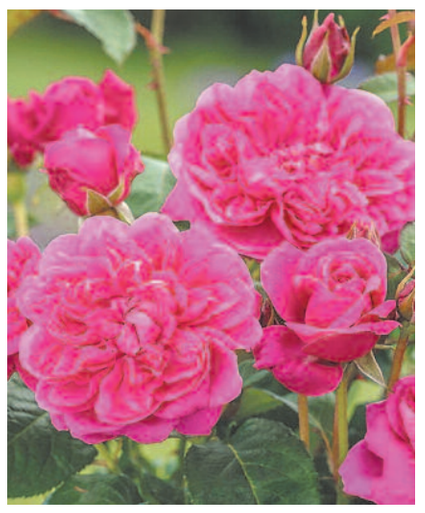

आयुर्वेद, योग और भारतीय ज्ञान परंपरा के विशिष्ट केंद्र के रूप में विकसित होगा ऋषिकुल : धामी

जयन्त प्रतिनिधि। देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास में हरिद्वार स्थित श्री मदन मोहन मालवीय प्राच्य शोध संस्थान, ऋषिकुल के समग्र विकास से संबंधित प्रस्तावित मास्टर प्लान की समीक्षा की। बैठक में मुख्यमंत्री के समक्ष संस्थान के प्रस्तावित स्वरूप एवं विभिन्न गतिविधियों से संबंधित प्रस्तुतीकरण किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऋषिकुल को आयुर्वेद, योग और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। इसके समग्र विकास में आयुर्वेद, मेडिकल टूरिज्म, योग, ज्योतिष और वैदिक गणित को विशेष प्रमुखता दी जाए। इन क्षेत्रों में उच्च स्तरीय शैक्षणिक, शोध एवं अध्ययन की व्यवस्थाएं विकसित की जाएं, जिससे यह संस्थान भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शोध के बीच प्रभावी सेतु बन सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आयुष, योग और संस्कृत देवभूमि उत्तराखण्ड की प्रमुख पहचान हैं। राज्य की इस विशिष्ट पहचान को ऋषिकुल के विकास में प्रमुखता से प्रतिबिंबित किया जाए। संस्थान में विकसित होने वाली शैक्षणिक गतिविधियां उच्च स्तरीय हों तथा यहां भारतीय ज्ञान, प्राच्य विद्याओं, आयुर्वेद और योग से संबंधित अध्ययन एवं शोध के लिए उत्कृष्ट वातावरण तैयार किया जाए। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि परिसर का वास्तुशिल्प प्राच्य एवं पारंपरिक स्थापत्य शैली के अनुरूप हो। भवनों के बाह्य स्वरूप और फसाड में प्राचीन स्थापत्य परंपरा की झलक दिखाई दे, जबकि परिसर में उपलब्ध कराई जाने वाली व्यवस्थाएं एवं सुविधाएं आधुनिकतम हों। उन्होंने कहा कि प्राचीनता और आधुनिकता के संतुलित समन्वय से परिसर की विशिष्ट पहचान विकसित की जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि परियोजना के प्रत्येक पहलू में इसकी मूल अवधारणा स्पष्ट रूप से दिखाई दे। संपूर्ण परिसर को इस प्रकार विकसित किया जाए कि यहां आने वाले लोगों को भारतीय संस्कृति, ज्ञान और अध्यात्म की अनुभूति हो तथा यह उन्हें आध्यात्मिक, भौतिक और भावनात्मक रूप से आकर्षित करे। मुख्यमंत्री ने कहा कि मां गंगा के कारण हरिद्वार का विशेष धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। देश-दुनिया से बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक हरिद्वार आते हैं। इसलिए ऋषिकुल के विकास की अवधारणा में हरिद्वार की इस विशिष्टता को केंद्र में रखा जाए। यहां आने वाले लोगों को भारतीय ज्ञान परंपरा, आयुर्वेद, योग और अध्यात्म की समृद्ध विरासत को जानने और अनुभव करने का अवसर मिले। बैठक में मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन, प्रमुख सचिव आर.के. सुधांशु, डॉ. आर. मीनाक्षी सुंदरम, सचिव धीराज गर्ब्याल, दीपक कुमार, युगल किशोर पंत, रंजना राजगुरू, उपाध्यक्ष हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण श्रीमती सोनिका, अपर सचिव अभिषेक रुहेला एवं वर्चुअल माध्यम से जिलाधिकारी हरिद्वार मयूर दीक्षित उपस्थित थे।

सभी कार्य चरणबद्ध और समयबद्ध तरीके से दो वर्ष में पूर्ण करें

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिए कि परियोजना से संबंधित सभी कार्यों को समयबद्ध किया जाए। विभिन्न कार्यों के लिए स्पष्ट चरण और समय-सीमा निर्धारित करते हुए इन्हें चरणबद्ध तरीके से दो वर्ष के भीतर पूर्ण किया जाए।

प्रस्तुतीकरण में ऋषिकुल को योग एवं ध्यान, उच्च स्तरीय शैक्षणिक गतिविधियों, आयुर्वेद एवं समग्र स्वास्थ्य, भारतीय दर्शन, वैदिक एवं शास्त्रीय अध्ययन, कला-संस्कृति तथा शोध गतिविधियों के समन्वित केंद्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना प्रस्तुत की गई। प्रस्तावित मास्टर प्लान में अकादमिक, योग एवं ध्यान, आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं वेलनेस सहित विभिन्न क्षेत्रों के समग्र विकास की अवधारणा रखी गई है।

हल्द्वानी मंडी में चना महंगा, दो से तीन रुपये तक बढ़े दाम

हल्द्वानी। कुमाऊं की सबसे गल्ला मंडी में चने के दामों में तेजी आई है। पिछले एक सप्ताह में चना दो से तीन रुपये प्रति किलो की दर से महंगा हुआ है। हल्द्वानी मंडी में चने के भाव 75 से 90 रुपये किलो चल रहे हैं। व्यापारियों के मुताबिक त्योहारों के चलते मांग बढ़ने और प्रमुख मंडियों में आवक कमजोर रहने से दामों में तेजी बनी हुई है।

व्यापारी तुषार गुप्ता ने बताया कि हल्द्वानी में चने की आपूर्ति मुख्य रूप से मध्य प्रदेश से हो रही है और फिलहाल आवक में कोई बड़ा अंतर नहीं है। इसके बावजूद देशभर में चने के दाम मजबूत बने हुए हैं। कारोबारी रोहित गर्ग ने बताया कि त्योहारों की मांग को देखते हुए फिलहाल कीमतों में कमी की संभावना कम है। चने के दाम बढ़ने का असर दाल और बेसन की कीमतों पर भी पड़ा है। व्यापारियों की माने तो चने की नई फसल आने तक दाम घटने की संभावना कम है।

संक्षिप्त समाचार

नए रिकॉर्ड की ओर चारधाम यात्रा, 15 सितंबर से शुरू होने जा रहा है दूसरा चरण

देहरादून। चारधाम यात्रा नया रिकॉर्ड बनाने की ओर बढ़ रही है। 15 सितंबर से यात्रा का दूसरा चरण शुरू होने जा रहा है, लेकिन यात्रा मार्गों पर जगह-जगह भूस्खलन जोन की चुनौतियां भी परीक्षा लेंगी। यात्रा में दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं का आंकड़ा 50 लाख पार कर चुका है। सरकार को उम्मीद है कि यह संख्या 60 लाख तक पहुंच सकती है। 19 अप्रैल को गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने के साथ चारधाम यात्रा का आगाज हुआ। 22 अप्रैल को केदारनाथ और 23 अप्रैल को बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने के बाद यात्रा पूर्ण रूप से संचालित हुई। इस बार मानसून सीजन में श्रद्धालुओं की संख्या में भले ही कमी आई, लेकिन यात्रा निर्बाध रूप से चलती रही। पर्यटन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, 10 सितंबर तक चारधाम यात्रा में दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या 50 लाख पार हो चुकी है। यात्रा नवंबर तक चलेगी। सरकार को उम्मीद है कि इस बार श्रद्धालुओं की संख्या 60 लाख तक पहुंच सकती है। बीते वर्ष पूरे यात्रा काल में 51 लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन किए थे।

जमरानी बांध: दो दिन की बारिश ने डुबाए 3.05 करोड़

नैनीताल। जमरानी बांध परियोजना को एक और दो सितंबर की मूसलाधार बारिश ने तगड़ा झटका दिया है। भारी नुकसान के चलते परियोजना का काम रोकना पड़ा जो नौ सितंबर से दोबारा शुरू हो सका। करीब एक हफ्ते तक काम ठप रहने से परियोजना को बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है। परियोजना के उप महाप्रबंधक बीबी पांडेय ने बताया कि नुकसान का आकलन कर लिया गया है। बांध कंपोनेंट में 1.43 करोड़ और अमृतपुर-जमरानी सड़क व जमरानी कॉलोनी में 1.62 करोड़ का नुकसान हुआ है। कुल मिलाकर 3.05 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इसके अलावा ठेकेदार को भी कुछ नुकसान हुआ है। उन्होंने बताया कि नुकसान की भरपाई परियोजना मद से ही की जाएगी और इसकी जानकारी उच्च स्तर पर दे दी गई है। बांध परियोजना का काम एक हफ्ते तक बंद रहने का दूरगामी असर पड़ेगा। इससे तय समय पर बांध निर्माण की अवधि में अंतर आ सकता है।

हल्द्वानी-कालाढूंगी हाईवे पर अज्ञात वाहन की टक्कर से तेंदुए की मौत

हल्द्वानी।रामनगर वन प्रभाग की कालाढूंगी रेंज अंतर्गत हनुमान मंदिर के पास हल्द्वानी-कालाढूंगी-रामनगर हाईवे पर अज्ञात वाहन की टक्कर से एक तेंदुए की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर वन विभाग और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और तेंदुए के शव को कब्जे में ले लिया।

वन विभाग की टीम ने तेंदुए के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने की कार्रवाई शुरू कर दी है। अधिकारियों के अनुसार, तेंदुए की मौत सड़क पार करते समय किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आने से हुई है।

एसआईआर कार्य में तेजी के साथ निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करें: डीएम

देहरादून,। जनपद देहरादून में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम अब अंतिम चरण में पहुंच गया है। निर्वाचन आयोग के निर्देशों के तहत चल रहे एसआईआर कार्य की जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने शुक्रवार को विस्तृत समीक्षा की। कलेक्ट्रेट सभागार में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ आयोजित बैठक में विधानसभा क्षेत्रवार एसआईआर की प्रगति, मतदाता सूची से संबंधित विसंगतियों, नो-मैपिंग प्रकरणों, जारी किए गए नोटिस, सुनवाई तथा दावे-आपत्तियों के निस्तारण की स्थिति पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि एसआईआर के प्रत्येक प्रकरण में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित प्रक्रिया और दिशा-निर्देशों का अक्षरशः पालन किया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी मतदाता के संबंध में निर्णय लेने से पहले उपलब्ध अभिलेखों एवं दस्तावेजों का समुचित सत्यापन किया जाए और नियमानुसार ही कार्रवाई की जाए।

पात्र मतदाता का नाम प्रभावित न हो

जिलाधिकारी ने अधिकारियों को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश देते हुए कहा कि पुनरीक्षण प्रक्रिया का उद्देश्य मतदाता सूची को अधिक शुद्ध एवं अद्यतन बनाना है। ऐसे में यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी पात्र मतदाता अनावश्यक रूप से प्रभावित न हो। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रकरण की जांच निष्पक्षता, पारदर्शिता और निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार की जानी चाहिए।

10 विधानसभा क्षेत्रों में 11.90 लाख से अधिक मतदाता

बैठक में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार देहरादून जनपद की 10 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में कुल 11,90,805 मतदाता दर्ज हैं। वर्ष 2003 की मतदाता सूची से संबंधित विवरणों के सत्यापन के दौरान जनपद में कुल 3,95,772 विसंगति (एनोमली) प्रकरण चिन्हित किए गए हैं। इसके अलावा 1,52,170 नो-मैपिंग प्रकरण भी सामने आए हैं।

इन प्रकरणों में जांच और सुनवाई की प्रक्रिया के दौरान अब तक 29,929 मतदाता अपात्र पाए गए हैं। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शेष प्रकरणों में भी निर्धारित प्रक्रिया के तहत जांच एवं सुनवाई की कार्रवाई समयबद्ध तरीके से पूरी की जाए।

चेतावनी, निकासी, प्राथमिक उपचार और बचाव के लिए बनेंगी विशेष टीमें

यूएसडीएमए की शिक्षा विभाग के साथ बैठक में बनी रणनीति

जयन्त प्रतिनिधि। देहरादून : उत्तराखण्ड के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का स्कूल आपदा प्रबंधन प्लान तैयार किया जाएगा। इस संबंध में शुक्रवार को सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास विनोद कुमार सुमन की अध्यक्षता में शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं प्रदेश के सभी मुख्य शिक्षा अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। विद्यालय में प्राथमिक उपचार की आवश्यक व्यवस्था, फर्स्ट एड किट तथा आवश्यक आपदा राहत एवं बचाव सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। विद्यार्थियों एवं विद्यालय स्टाफ को भूकंप, आग, भूस्खलन तथा अन्य संभावित आपदाओं के दौरान अपनाई जाने वाली सुरक्षित प्रक्रियाओं की जानकारी दी जाएगी। समय-समय पर मॉक ड्रिल आयोजित कर आपदा प्रबंधन प्लान की व्यवहारिकता को भी परखा जाएगा।बैठक में विद्यालयों को आपदाओं के प्रति अधिक सुरक्षित बनाने, आपदा के समय त्वरित एवं प्रभावी प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने तथा छात्र-छात्राओं एवं विद्यालय स्टाफ की सुरक्षा के लिए आवश्यक

तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की गई। सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास विनोद कुमार सुमन ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी तथा आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास मंत्री मदन कौशिक द्वारा हाल ही में राज्य के सभी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का आपदा प्रबंधन प्लान तैयार किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक विद्यालय का आपदा प्रबंधन प्लान उस विद्यालय की स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों और संभावित जोखिमों के आधार पर तैयार किया जाएगा। इसके लिए विद्यालय स्तर पर स्थानीय आपदा जोखिमों का आंकलन किया जाएगा तथा उसी के अनुरूप सुरक्षा एवं बचाव की कार्य योजना तैयार की जाएगी। उन्होंने बताया कि इसके लिए शिक्षा विभाग तथा यूएसडीएमए में समिति की गठन किया जाएगा। विद्यालय एवं उसके आसपास के क्षेत्र में भूकंप, भूस्खलन, बाढ़, फ्लैश फ्लड, बादल फटना, अतिवृष्टि, हिमपात, हिमस्खलन, आग तथा अन्य स्थानीय आपदाओं की संभावित स्थिति का चिन्हांकन किया जाएगा। आपदा की स्थिति में विद्यार्थियों एवं स्टाफ को विद्यालय भवन से सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने के लिए स्पष्ट निकासी मार्ग निर्धारित किए जाएंगे। प्रत्येक कक्षा एवं भवन के लिए आवश्यक निकासी व्यवस्था और सुरक्षित स्थान चिन्हित किए जाएंगे। विद्यालय परिसर में आपदा के समय एकत्रित होने के लिए सुरक्षित स्थान निर्धारित किया जाएगा। आपदा की स्थिति में कौन क्या भूमिका निभाएगा, इसकी स्पष्ट जिम्मेदारी निर्धारित की जाएगी। विद्यालय प्रधानाचार्य, शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी तथा आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों के स्तर पर भी जिम्मेदारियां तय की जाएंगी। पुलिस, फायर, स्वास्थ्य विभाग, राज्य व जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, तहसील एवं अन्य संबंधित विभागों के महत्वपूर्ण आपातकालीन संपर्क नंबर विद्यालय स्तर पर उपलब्ध एवं प्रदर्शित किए जाएंगे। बैठक में एसीईओ प्रशासन प्रकाश चंद्र, एसीईओ क्रियान्वयन डीआईजी राजकुमार नेगी, डीजी शिक्षा आकांक्षा कोण्डे, जेसीईओ दिनेश कुमार पुनेठा, डॉ. पीडी माथुर आदि उपस्थित रहे।

स्वच्छता सिर्फ सरकार की जिम्मेदारी नहीं, हमारी भी है

देहरादून। स्वच्छ शहर और स्वच्छ गांव की दिशा में सरकार की ओर से तमाम योजनाएं और अभियान चलाए जा रहे हैं, लेकिन इन प्रयासों की सफलता में आम लोगों की जिम्मेदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। आज भी कई जगह ऐसे मामले सामने आते हैं, जहां घर-घर कूड़ा उठाने की व्यवस्था होने के बावजूद कुछ लोग कूड़ा जंगलों, खाली प्लॉटों और सड़क किनारे फेंक देते हैं। इससे न केवल शहर और गांव की सुंदरता प्रभावित होती है, बल्कि पर्यावरण और जनस्वास्थ्य पर भी इसका प्रतिकूल असर पड़ता है। सवाल यह है कि जिस कूड़े को हम अपने घर से बाहर रखना चाहते हैं, उसे सड़क, जंगल या किसी दूसरे स्थान पर फेंककर क्या हम वास्तव में स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं?

स्वच्छता केवल सरकारी व्यवस्था नहीं, बल्कि हमारी आदत, जिम्मेदारी और पहचान है। जरूरत है कि कूड़ा सड़क या सार्वजनिक स्थान पर फेंकने के बजाय कूड़ा उठाने वाली गाड़ी में ही डाला जाए (

एनएच के पास मकानों में दरारें बढ़ने से ग्रामीण चिंतित

गरमपानी (नैनीताल)। भवाली-अल्मोड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग पर गंगोरी, मनरसा और जेएनवी सुयालबाड़ी क्षेत्र की सड़कों और लोगों के घरों पर दरारें पड़ने से ग्रामीण परेशान हैं। क्षेत्र में 12 से अधिक मकानों के नीचे की जमीन में लगातार दरारें बढ़ रही हैं। साथ ही बारिश के बीच भू-धंसाव का सिलसिला जारी रहने से मकानों को खतरा बना हुआ है ग्राम प्रधान नीमा देवी ने बताया कि क्षेत्र के चनी राम, नीरज कुमार, महेश लाल, आनंद राम, महेश राम, ईश्वर सिंह नेगी और प्रकाश सिंह आदि ग्रामीणों के भवनों और दुकानों में दरारें बढ़ने लगी हैं।

निरीक्षक नरेश राठौर समेत पुलिसकर्मियों पर जांच के आदेश

देहरादून। प्रेमनगर थाने की पुलिस पर लगाए गए गंभीर आरोपों के मामले में द्वितीय अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, देहरादून की अदालत ने पुलिस को विधिवत अन्वेषण के आदेश दिए हैं। मामले में 20 लाख रुपये का कथित समझौतानामा लिखवाने, थाने में बुलाकर मारपीट करने, बिना मुकदमा दर्ज किए पूछताछ करने तथा बाद में मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तारी करने जैसे आरोप लगाए गए हैं।

अदालत ने उपलब्ध दस्तावेजों और पुलिस रिपोर्ट के परीक्षण के बाद आरोपों को प्रथम दृष्टया संज्ञेय अपराध से जुड़ा माना है। न्यायालय ने धारा 175(3) बीएनएसएस के

तहत प्रार्थनापत्र स्वीकार करते हुए विधिवत जांच के निर्देश दिए हैं। मामले में पुलिस अधिकारियों के नाम आरोपी के रूप में सामने आने के कारण अदालत ने स्पष्ट किया है कि निष्पक्ष जांच के लिए निरीक्षक स्तर से ऊपर के पुलिस अधिकारी से अन्वेषण कराया जाए।

मामले में यशपाल सिंह तंवर, तत्कालीन प्रेमनगर थानाध्यक्ष नरेश सिंह राठौर, एसआई सतेंद्र सिंह, उपनिरीक्षक शोभा मेहता और महिला कांस्टेबल सुशीला के नाम सामने आए हैं। गौरतलब है कि हाल में नरेश सिंह राठौर को पटेलनगर कोतवाली का प्रभारी बनाया गया है।

नौकरी से हटाने के बाद चोरी का आरोप लगाने का दावा

उम्मेदपुर, प्रेमनगर निवासी प्रवीण सेमवाल ने अपनी पत्नी प्रतीक्षा सेमवाल और आकाश बंगवाल के साथ न्यायालय में प्रार्थनापत्र दाखिल किया। प्रवीण के अनुसार वह करीब पांच वर्षों तक यशपाल सिंह तंवर के आदर्श विहार स्थित तंवर सप्लायर्स में अकाउंटेंट के पद पर कार्यरत रहे। उन्हें 20 हजार रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता था। प्रवीण का आरोप है कि जनवरी 2026 में उन्हें नौकरी से हटा दिया गया और दो माह का वेतन भी नहीं दिया गया। इसके बाद उन्होंने कर्ज लेकर अपना सप्लायर्स का कारोबार शुरू किया। आरोप के मुताबिक बाद में यशपाल सिंह तंवर ने उन पर नौकरी के दौरान करीब 20 लाख रुपये की चोरी करने का आरोप लगाया।

थाने में बुलाकर 20 लाख रुपये का समझौतानामा लिखवाने का आरोप

प्रवीण के अनुसार 10 मार्च 2026 को उन्हें प्रेमनगर थाने बुलाया गया। आरोप है कि वहां एसआई सतेंद्र सिंह ने यशपाल सिंह तंवर की मौजूदगी में उनके साथ अभद्रता और मारपीट की तथा 20 लाख रुपये की देनदारी स्वीकार करने वाला समझौतानामा लिखने के लिए दबाव बनाया।

नैनीताल रोड पर छात्र नेताओं का शक्ति प्रदर्शन

हल्द्वानी। नैनीताल रोड पर छात्र नेताओं ने शक्ति प्रदर्शन के नाम पर शुक्रवार को धड़ल्ले से यातायात नियमों की धज्जियां उड़ाईं। हैरानी की बात है कि इस दौरान न तो नागरिक पुलिस और न ही ट्रैफिक कर्मियों या सीपीयू कर्मियों की नजर इन पर पड़ी। वीडियो वायरल होने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। हालांकि अमर उजाला वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता है। नियमों की धज्जियां उड़ाते हुए सड़क पर खुलेआम हुड़दंग करने और शक्ति प्रदर्शन के नाम पर अराजकता दिखाती एक 22 सेकेंड की वीडियो शुक्रवार को सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुई। वीडियो में बड़ी संख्या में युवक-युवतियां गाड़ी की छतों पर बैठे, कार की खिड़की से निकलकर लटके हुए, बाइकों पर अनियंत्रित फर्राटा भरते दिखाई दे रहे हैं। यह वीडियो नैनीताल मार्ग पर एमबीपीजी कॉलेज के पास की बताई जा रही है। आम वाहन चालक हेलमेट, सीट बेल्ट और दूसरे यातायात नियमों के पालन के लिए रोका जाता है, चालान काटे जाते हैं, लेकिन प्रभावशाली दिखने वाले छात्र नेताओं के काफिले में नियमों की खुलेआम अनदेखी को किसी भी पुलिसकर्मी ने क्यों नहीं देखा, यह सवाल भी खड़ा हो रहा है। सवाल सिर्फ नियम तोड़ने वालों का नहीं, बल्कि व्यवस्था संभालने वाली पुलिस की जिम्मेदारी का भी है।

कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी, विकासखण्ड नैनीडांडा, पौड़ी गढ़वाल।

पत्रांक 758/लेखा/निवि0सू0/जि0यो0/2026-27 दिनांक 11.09.2026

:::: अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना ::::

एतद्द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि विकास खण्ड नैनीडांडा पौड़ी गढ़वाल में जिला योजना के अर्न्तगत निम्नलिखित कार्यों हेतु सरकारी/अर्धसरकारी विभागो में पंजीकृत अनुभवी फर्मों को दिनांक 26.09.2026 दिन (शनिवार) की सायं 03:00 बजे तक मुहरबन्द लिफाफे में निविदाये आमंत्रित की जाती है जो कि उसी दिन विकास खण्ड कार्यालय नैनीडांडा में उपस्थित निविदादाताओं व उनके प्रतिनिधियों के सम्मुख सायं 3-30 बजे चयनित गठित समिति के द्वारा खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र किसी भी कार्य दिवस में दिनांक- 25.09.2026 सांय 5.00 बजे तक विक्रय की जायेगी।

क्र0 सं0	कार्य का नाम/स्थल का पूर्ण विवरण सहित	निविदा धरोहर	निविदा मूल्य (18 प्रति0 जी0एस0टी0 सहित)	कार्य पूर्ण किये जाने की अवधि	निविदा की वैधता
1	विकासखण्ड नैनीडांडा के पुराने आवासीय भवन का दो आवासीय भवन को नव निर्माण कार्य	69000.00	2000+18% +GST	06 माह	06 माह

नियम एवं शर्तें-

1- निविदा प्रस्तुत करते समय ठेकेदार को पंजीकरण प्रमाण-पत्र एवं धरोहर धनराशि (राष्ट्रीयकृत बैंक की एफ0डी0आर0/ डाकघर की पासबुक/किसान विकास पत्र / राष्ट्रीय बचत पत्र/100 रू0 का स्टाप पेपर, सहित जोकि अधोहस्ताक्षरी के नाम बंधक होगी, संलग्न करना आवश्यक होगा

2- निर्धारित अवधि के उपरान्त कोई निविदा प्राप्त नहीं की जायेगी।

3- समस्त कार्य निर्धारित मानको एवं कनिष्ठ अभियन्ता के निर्देशानुसार समयान्तर्गत पूर्ण करने होगे।

4- लिफाफे पर कार्य का नाम लिखना अनिवार्य होगा।

5- निविदा प्रपत्र के साथ 100.00 रु0 का उत्तराखण्ड राज्य से निर्गत नॉन-ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर, रू0 1.00 के रसीदी टिकट के साथ हस्ताक्षरयुक्त होना अनिवार्य है।

6- शेष शर्ते निविदा प्रपत्र अनुसार के होगी।

7- अधोहस्ताक्षरी बिना कारण बताये निविदा निरस्त करने का पूर्ण अधिकार है।

खण्ड विकास अधिकारी
विकासखण्ड नैनीडांडा पौड़ी गढ़वाल।

(0426/21)

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे नाम पर एल0आई0सी0 पॉलिसी संख्या 273363741 है। जिसमें मेरा नाम SANTA DEVI RAWAT W/o SH CHANDRA MOHAN SINGH RAWAT दर्ज है, जबकि मेरे आधार कार्ड संख्या 9967 0220 3087 में मेरा नाम SANTOSHI DEVI W/O CHANDRAMOHAN SINGH दर्ज है। SANTA DEVI RAWAT W/o SH CHANDRA MOHAN SINGH RAWAT एवं SANTOSHI DEVI W/O CHANDRAMOHAN SINGH एक ही महिला याने मेरे ही नाम है तथा मुझे उपरोक्त दोनों नामों से जाना एवं पहचाना जाता है।

संतोषी देवी पत्नी चंद्रमोहन सिंह
निवासी गाडीघाट, तहसील कोटद्वार, जनपद पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।
(0603/21)

जयन्त

संस्थापक : नरेन्द्र उनियाल

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस बदरीनाथ मार्ग, कोटद्वार गढ़वाल (उत्तराखण्ड) से मुद्रित तथा बदरीनाथ मार्ग, कोटद्वार गढ़वाल (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र कोटद्वार, (गढ़वाल) उत्तराखण्ड होगा।

CONT. 9412081969
PRGI NO. 35469/79

बांग्लादेश के खिलाफ शांत रहते हुए पारी को बढ़ाने की कोशिश की: शेफाली वर्मा

दुबई, एजेंस। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशिया कप 2026 के फाइनल में जगह बना ली है। गुरुवार को हुए सेमीफाइनल मुकाबले में भारतीय टीम ने बांग्लादेश को हराकर फाइनल में जगह बनाई। भारतीय टीम की जीत में सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा की 64 रनों की विस्फोटक पारी की अहम भूमिका रही। शेफाली को उनकी बेहतरीन पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। वर्मा ने कहा कि उन्होंने गुरुवार को यहां महिला एशिया कप सेमीफाइनल में बांग्लादेश के खिलाफ मैच जिताने वाली 64 रन की पारी के दौरान मुश्किल बैटिंग पिच के हिसाब से खुद को ढालते हुए शांत रहने और टीम के लिए योगदान देने पर ध्यान दिया। शेफाली ने बीसीसीआई विमेन द्वारा जारी एक वीडियो में कहा, 'एक सलामी बल्लेबाज के तौर पर मैं कभी-कभी बड़े शॉट लगाती हूं और कभी-कभी बस शांत रहने और सिंगल लेने की कोशिश करती हूं, क्योंकि स्मृति भी साथ होती हैं। कभी-कभी, मैं बस टीम के लिए वहां रहने और पारी को आगे बढ़ाने की कोशिश करती हूं।' सीनियर खिलाड़ी और ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा ने शेफाली वर्मा की तारीफ करते हुए कहा, 'गेंद उनके पास वैसी नहीं आ रही थी जैसी वह चाहती थीं। पिछले मैच से अलग चुनौती थी, पिच भी मुश्किल थी, लेकिन उन्होंने खुद को शांत रखा और अपने शॉट्स पर भरोसा किया। यह देखना अच्छा था, और उनके शॉट्स को देखकर लगा कि उनकी मानसिकता स्पष्ट नजर आई। उन्हें पता था कि क्या करना है, और ये छोटी-छोटी चीजें उनकी मदद कर रही थीं।' दीप्ति ने कहा, 'मैं बहुत खुश हूं कि मुझे 2-3 या 4 बॉल खेलने को मिलीं, और मैं बस जल्द से जल्द ऐसी छोटी पारी खेलने का इंतज़ार कर रही थी। मैं बहुत खुश हूं कि मैं आखिरी कुछ गेंदों पर योगदान दे पाई। एक ऑल-राउंडर के तौर पर खेल के अलग-अलग विभाग में योगदान करना अहम है। जब आप तीनों डिपार्टमेंट्स में अपना बेस्ट करने जाते हैं, तो ज़ाहिर है आप एक कदम आगे होते हैं, चाहे वह बैटिंग हो, बॉलिंग हो या फील्डिंग।'

बायर्न ने चैंपियंस लीग के पहले मैच में बोडो/ग्लिम्ट को 5-0 से हराया

बर्लिन। जमाल मुसियाला ने बायर्न म्यूनिख की शुरुआती लाइनअप में वापसी करते हुए पहला गोल किया। इसकी मदद से जर्मन टीम ने यूईएफए चैंपियंस लीग में बोडो/ग्लिम्ट को 5-0 से हरा दिया। बायर्न ने शुरू से ही गेंद पर कब्जा बनाए रखा, लेकिन शुरुआत में मेहमान टीम की पांच लोगों की डिफेंसिव लाइन को तोड़ने में संघर्ष किया। लुइस डियाज को पांच मिनट बाद पहला हाफ में मौका मिला, जोशुआ किमिच के क्रॉस पर उन्होंने पास से हेडर मारा, लेकिन गोलकीपर निकिता हाइकिन ने उसे बचा लिया। किमिच का 22 मीटर का शॉट 33वें मिनट में पोस्ट के बाहर लगा, इससे पहले हाइकिन ने पहले हाफ के आखिर में मुसियाला और फिर किमिच को रोका। हाइकिन, जिन्हें बाद में सेव करते समय कमर में दिक्कत हुई, उनकी जगह हाफटाइम में जूलियन फे लुंड ने ले ली, और बायर्न को रीस्टार्ट के बाद सिर्फ दो मिनट में ही बढ़त मिल गई। हैरी केन को रोकने की कोशिश में व ब्लॉक हो गई, लेकिन मुसियाला ने लूज बॉल को पकड़ा और अपना शॉट बाएं कोने में मार दिया। केन ने 61वें मिनट में माइकल ओलिस की फ्री-किक डिलीवरी पर फे लुंड के पास से हेडर मारकर बढ़त दोगुनी कर दी। अल्फांसो डेविस ने 77वें मिनट में 17-मीटर का स्ट्राइक करके मैच को आसानी से खत्म कर दिया, जिसके छह मिनट बाद ओलिस ने लेनार्ट कार्ल के पास पर बायर्न के लिए चौथा गोल किया। बोडो/ग्लिम्ट का काम तब और मुश्किल हो गया जब 87वें मिनट में ओडिन ब्योर्टुफ्ट को पेनल्टी एरिया के पास ओलिस को गिराने के लिए रेड कार्ड दिखाया गया। ओलिस ने फिर स्टॉपेज टाइम में अपना डबल पूरा किया और विंसेंट कोम्पनी की टीम के लिए दूसरे हाफ में पांच गोल किए। जीत के बाद केन ने कहा, 'हम पहले हाफ में काफी बेहतर थे। हमें बस दरवाजा खुलने तक सब्र रखना था। दूसरे हाफ की शुरुआत में किए गए गोल ने गेम को आगे बढ़ाया और हम और मजबूत हुए।'

सबालेंका, रायबाकिना के खिलाफ नंबर 1 की चुनौती के लिए तैयार हैं

न्यूयॉर्क, एजेंसी। ऐलेना रायबाकिना से विश्व नंबर 1 रैंकिंग गंवाने पर आर्यना सबलेंका ने आखिरकार खुलकर अपनी बात रखी है। उन्होंने स्वीकार किया कि यूएस ओपन में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद शीर्ष स्थान से हाथ फिसलते देखना थोड़ा अजीब लग रहा था। हालांकि, रायबाकिना के खिलाफ होने वाले रोमांचक फाइनल से पहले बेलारूसी खिलाड़ी इस हार पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहतीं। क्वार्टर फाइनल में किनवेन झेंग को 3-6, 6-1, 6-4 से हराकर रायबाकिना ने नंबर 1 रैंकिंग हासिल कर ली । इस जीत के साथ ही कजाख खिलाड़ी ने सबालेंका को पछाड़कर शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया और बेलारूसी खिलाड़ी के 99 सप्ताह के वर्चस्व को समाप्त कर दिया। इसके बाद रायबाकिना ने सेमीफाइनल में कोको गॉफ को हराकर फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। सेमीफाइनल में जेसिका पेगुला को 7-5, 6-2 से हराने के बाद अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए , सबलेंका ने स्वीकार किया कि रायबाकिना ने सीजन के मध्य में अपने प्रदर्शन में आई गिरावट के बावजूद शीर्ष स्थान हासिल करने के लिए पर्याप्त प्रदर्शन किया है। 'मैं अच्छी तरह समझती हूं कि विश्व नंबर 1 बनना कितना मुश्किल है। यह मेरा एक लक्ष्य था। लेकिन अभी मैं कुछ खास नहीं कर सकती। सीजन के मध्य में मेरा प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। एलेना ने कमान संभाली और बहुत अच्छा खेला,' सबलेंका ने कहा। 28 वर्षीय खिलाड़ी अब लगातार चौथी बार यूएस ओपन के फाइनल में पहुंच चुकी हैं, जिससे उन्हें रैंकिंग में गिरावट के बावजूद टूर्नामेंट को एक और ग्रैंड स्लैम खिताब के साथ समाप्त करने का मौका मिल गया है। 'मैं सिर्फ खुद पर ध्यान केंद्रित कर सकती हूं और वर्तमान क्षण में रहकर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश कर सकती हूं। बस इसे बरकरार रखना है और शायद मैं उससे यह खिताब वापस ले लूं,' उसने आगे कहा।

फाइनल में रायबाकिना का सामना होगा

फाइनल में पहुंचकर सबलेंका को शीर्ष स्थान से हटकर अपनी जगह बनाने वाली खिलाड़ी के खिलाफ खुद को परखने का सीधा मौका मिलेगा। रायबाकिना अपना पहला यूएस ओपन खिताब जीतने की कोशिश में हैं, जबकि सबलेंका न्यूयॉर्क में लगातार तीसरी चैंपियनशिप जीतने का प्रयास कर रही हैं। सबलेंका को पता है कि आगे क्या चुनौती है। रायबाकिना ने अपनी शानदार सर्विस और आक्रामक बेसलाइन गेम के दम पर पूरे टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया है, वहीं गौफ के खिलाफ उनकी वापसी ने यह साबित कर दिया कि जब मैच कड़े हो जाते हैं तो वह दबाव को भी झेल सकती हैं। हालांकि, सबलेंका के लिए स्थिति स्पष्ट है। रैंकिंग में फिर से बदलाव हो सकता है, और वह जानती है कि खुद को फिर से मुकाबले में लाने के लिए उसे क्या करना होगा। उन्होंने कहा, 'हर कोई एक-दूसरे का पीछा कर रहा है। यह सब छोटी-छोटी चीजों में सुधार करने और बेहतर बनने के बारे में है।' शनिवार को, यूएस ओपन ट्रॉफी की दौड़ में नई विश्व नंबर 1 और उनकी पूर्ववर्ती खिलाड़ी सबसे बड़े मंच पर आमने-सामने होंगी।

सबालेंका ने नंबर 1 बदलाव को स्वीकार किया

रैंकिंग में बदलाव के समय ने स्थिति को विशेष रूप से असामान्य बना दिया है। सबालेंका एक बार फिर न्यूयॉर्क में बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक रही हैं और फाइनल में अपने खिताब का बचाव करेंगी, फिर भी रायबाकिना के शानदार प्रदर्शन ने उनसे शीर्ष रैंकिंग छीन ली। सबलेंका ने स्वीकार किया कि उन्हें इस बात को स्वीकारना मुश्किल लगा, लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि यह अंततः टेनिस की प्रतिस्पर्धी प्रकृति का ही एक हिस्सा है। 'यह थोड़ा अजीब लगता है कि आप टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करें और फिर भी आपसे नंबर 1 स्थान छीन लिया जाए। कोई बात नहीं। यही तो खेल है। मुझे यह पसंद है। यही तो खेल की खूबसूरती है,' उन्होंने कहा। न्यूयॉर्क पहुंचने से पहले ही रायबाकिना रैंकिंग में अंतर कम कर रही थीं और फाइनल में पहुंचकर उन्होंने निर्णायक बढ़त हासिल कर ली। गौफ पर उनकी जीत का मतलब है कि वह शनिवार को होने वाले फाइनल में विश्व की नंबर 1 खिलाड़ी के रूप में उतरेंगी।

नवांग त्सेरिंग ने जीता 'लद्दाख मैराथन'

- 122 किलोमीटर की दूरी रिकॉर्ड समय में पूरा किया

लद्दाख, एजेंस। अपनी प्रतिभा को पहचानकर कोई भी अगर उस पर कड़ी मेहनत करता है और निखारने की लगातार कोशिश करता है, तो एक न एक दिन उसे बड़ी सफलता जरूर मिलती है। नवांग त्सेरिंग की कहानी कुछ ऐसी ही है। नवांग ने लद्दाख मैराथन जीतकर रिकॉर्ड बनाया है। नवांग त्सेरिंग ने लद्दाख मैराथन में 122 किलोमीटर सिल्क रूट अल्ट्रा (एसआरयू) की दूरी को 12 घंटे, 12 मिनट और 18 सेंकड (12:12:18) में पूरा कर रिकॉर्ड बनाते हुए पहला स्थान हासिल किया है। त्सेरिंग का यह पहला प्रयास था और पहले ही प्रयास में वह चैंपियन बनकर निकले हैं। लद्दाख मैराथन जीतने के बाद आईएएनएस से खास बातचीत में नवांग ने कहा, 'मैंने लद्दाख मैराथन सिल्क रुट अल्ट्रा (एसआरयू) में पहली बार हिस्सा लिया था और पहले प्रयास में ही पहला स्थान हासिल किया है। यह काफी मुश्किल और चुनौतीपूर्ण था। मेरी मांसपेशिया काफी सख्त हो गई थीं। प्रतिस्पर्धा काफी कड़ी थी। इस साल मैंने (12:12:18) रिकॉर्ड बना दिया है।' नवांग ने अपनी सफलता का श्रेय अपने सभी कोचों, सहयोगियों और प्रशासन को दिया। मैराथन में आने से जुड़े सवाल पर नवांग ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं अपने दोस्तों को देखकर मैराथन में आया हूं। मैं उन लोगों को देखता था। वे दूसरे राज्यों में जाते थे। वही, देखकर मैंने मैराथन में आने का फैसला किया।' युवाओं को संदेश देते हुए नवांग ने कहा, 'मैं युवाओं से यह कहना चाहता हूं कि आप सभी अपनी प्रतिभा को बर्बाद मत कीजिए। अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करिए। मैं यह नहीं कह रहा कि सभी दौड़ में ही आगे आएं। सभी के पास एक खास प्रतिभा होती है। आप उस प्रतिभा को निखारिए और उसमें आगे बढ़िए।' नवांग की सफलता निश्चित रूप से उन युवाओं के लिए प्रेरणा है जो अभावों के बीच बड़ी उपलब्धि हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं।

कुलदीप यादव ने 10 विकेट लेकर इंग्लैंड में काटा गदर

टीम को दिलाई जीत

यॉर्कशर ने एसेक्स को पारी और 106 रनों से मात दी। इस मैच में कुलदीप ने कुल 10 विकेट अपने नाम किए। उन्होंने पहली पारी में चार विकेट लिए तो वहीं दूसरी पारी में छह विकेट अपने नाम किए। रन खर्च करने के मामले में भी कुलदीप कंजूस ही रहे। उन्होंने पहली पारी में 70 रन खर्च किए और दूसरी पारी में 50 रन। यहां तक की कुलदीप ने अपने बल्ले से भी टीम की जीत में अहम योगदान दिया।

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम में लगातार नजरअंदाज किए जाने वाले चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव इस समय इंग्लैंड में काउंटी क्रिकेट खेल रहे हैं। कुलदीप ने यॉर्कशर की जर्सी पहनी है और अपनी फिरकी पर अंग्रेज बल्लेबाजों को जमकर नचाया है। उन्होंने एसेक्स के खिलाफ खेले गए मैच में 10 विकेट लेकर अपनी काबिलियत को फिर सिद्ध किया है और टीम इंडिया के मैनेजमेंट को एक कड़ा संदेश भी दिया है। कुलदीप को टी20, वनडे और टेस्ट में नियमित मौके नहीं मिल रहे हैं। गौतम गंभीर ने जब से टीम इंडिया के कोच का पद संभाला है तब से कुलदीप को नियमित रूप से प्लेइंग-11 में जगह नहीं मिली है, लेकिन इंग्लैंड में इस गेंदबाज ने जो किया है उसने गंभीर को भी सोचने को मजबूर कर दिया होगा।

क्या बदलेगा प्लान?

कुलदीप के इस प्रदर्शन के बाद सवाल ये है कि क्या टीम मैनेजमेंट उन्हें लेकर अपने प्लान में बदलाव करेगा? हाल ही में श्रीलंका दौरे पर कुलदीप को नजरअंदाज किया गया था। स्पिनरों की मददगार पिचों पर कुलदीप को नजरअंदाज करना भारत को भारी पड़ सकता है। वह अपनी फिरकी से इंग्लैंड में बल्लेबाजों के लिए काल बन चुके हैं तो उपमहाद्वीप में तो वह और ज्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं।

टेस्ट जर्सी के लिए अर्शदीप झोंक रहे हैं पूरी ताकत

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की टी20 टीम के अहम सदस्य अर्शदीप सिंक का सपना भी हर क्रिकेटर की तरह टेस्ट क्रिकेट खेलना है। वह चाहते हैं कि लाल गेंद से भी अपनी स्विंग का कमाल दिखाएं। अभी तक वह सीमित ओवरों में ही चमके हैं और टेस्ट गेंदबाज के तौर पर भी अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। इसलिए वह फर्स्ट क्लास क्रिकेट को नजरअंदाज नहीं करते है। उनको पता है कि टेस्ट खेलने के सपने को पूरा करने की राह में प्रथम श्रेणी क्रिकेट अधिक नहीं खेलने को आदर्श तैयारी नहीं माना जा सकता, लेकिन उनका कहना है कि यह पारंपरिक प्रारूप के लिए उनकी तैयारी में कमी को नहीं दर्शाता है।

हर कोशिश जारी

सीमित ओवरों के प्रारूप में भारत के शीर्ष गेंदबाजों में से एक अर्शदीप ने दिसंबर 2019 में पदार्पण के बाद से सिर्फ 24 प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं। दलीप ट्रॉफी के दो मैच खेलने से पहले उन्होंने एक साल तक कोई प्रथम श्रेणी मैच नहीं खेला था। अर्शदीप ने समाचार एजेंसी पीटीआई को दिए साक्षात्कार में कहा कि मैं टेस्ट क्रिकेट खेलने के लिए अपनी ओर से हरसंभव प्रयास कर रहा हूं।

एशियन गेम्स स्क्वॉड से अन्नू रानी बाहर

क्वालिफिकेशन मार्क नहीं छू पाईं, चोट से लौटे अविनाश साबले ने स्टीपलचेज में जगह पक्की की

नई दिल्ली, एजेंसी। हांगझोउ एशियन गेम्स की गोल्ड मेडलिस्ट अन्नू रानी जापान एशियन गेम्स के भारतीय स्क्वॉड से बाहर हो गई हैं। वे महिलाओं की जैवलिन थ्रो में क्वालिफिकेशन मार्क हासिल नहीं कर सकीं। अन्नू ने गुरुवार को छ्रस्ह्र स्टेडियम में इंडियन एथलेटिक्स फाइनल सीरीज में 57.50 मीटर का थ्रो किया। वह 57.62 मीटर के क्वालिफिकेशन मार्क से 12 सेंटीमीटर पीछे रह गईं।

अविनाश साबले की वापसी – इसी इवेंट में चोट से लौटे अविनाश साबले ने 3,000 मीटर स्टीपलचेज में गोल्ड जीता। उन्होंने 8:32.39 सेकेंड का समय निकालकर 8:36.57 सेकेंड का क्वालिफिकेशन मार्क हासिल किया। एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने प्रतियोगिता से पहले खिलाड़ियों को साफ कर दिया था कि एशियन गेम्स में जाने के लिए क्वालिफिकेशन मार्क हासिल करना जरूरी है। स्नद्ध प्लानिंग कमेटी के चेयरमैन ललित भनोत ने कहा, जिसने क्वालिफिकेशन मार्क हासिल नहीं किया है, उसे एशियन गेम्स में नहीं भेजा जाएगा। स्नद्ध का रुख बिल्कुल साफ था। उन्होंने कहा, अगर अन्नू रानी क्वालिफाई नहीं कर पाई हैं, तो वे नहीं जाएंगी। जिन खिलाड़ियों ने मार्क हासिल नहीं किया है, वे दल का हिस्सा नहीं होंगे।

अविनाश 14 महीने तक चोट से बाहर रहे – 31 साल के अविनाश साबले 14 महीने तक चोट के कारण बाहर रहने के बाद अपनी 3,000 मीटर स्टीपलचेज स्पर्धा में लौटे। उन्होंने 8:32.39 सेकेंड के समय के साथ गोल्ड जीता। उनका समय 8:36.57 सेकेंड के एशियन गेम्स क्वालिफिकेशन मार्क से बेहतर रहा।

19 सितंबर से शुरू होगा इवेंट – एशियन गेम्स 2026 का 19 सितंबर से 4 अक्टूबर 2026 तक जापान के आइची-नागोया में खेला जाएगा। यह एशियन गेम्स का 20वां संस्करण है। इसमें एशिया के 45 देशों के खिलाड़ी अलग-अलग खेलों में हिस्सा लेंगे। भारतीय दल भी एथलेटिक्स, शूटिंग, बॉक्सिंग, कुश्ती, बैडमिंटन, हॉकी, तीरंदाजी, कबड्डी और क्रिकेट समेत कई खेलों में चुनौती पेश करेगा।